



नोएडा स्वर

10वां संस्करण
वर्ष 2024

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), नोएडा

(सचिवालय : भारतीय अन्तर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण, नोएडा)

ए-13, सेक्टर - 1, नोएडा -201301

नोएडा स्वर

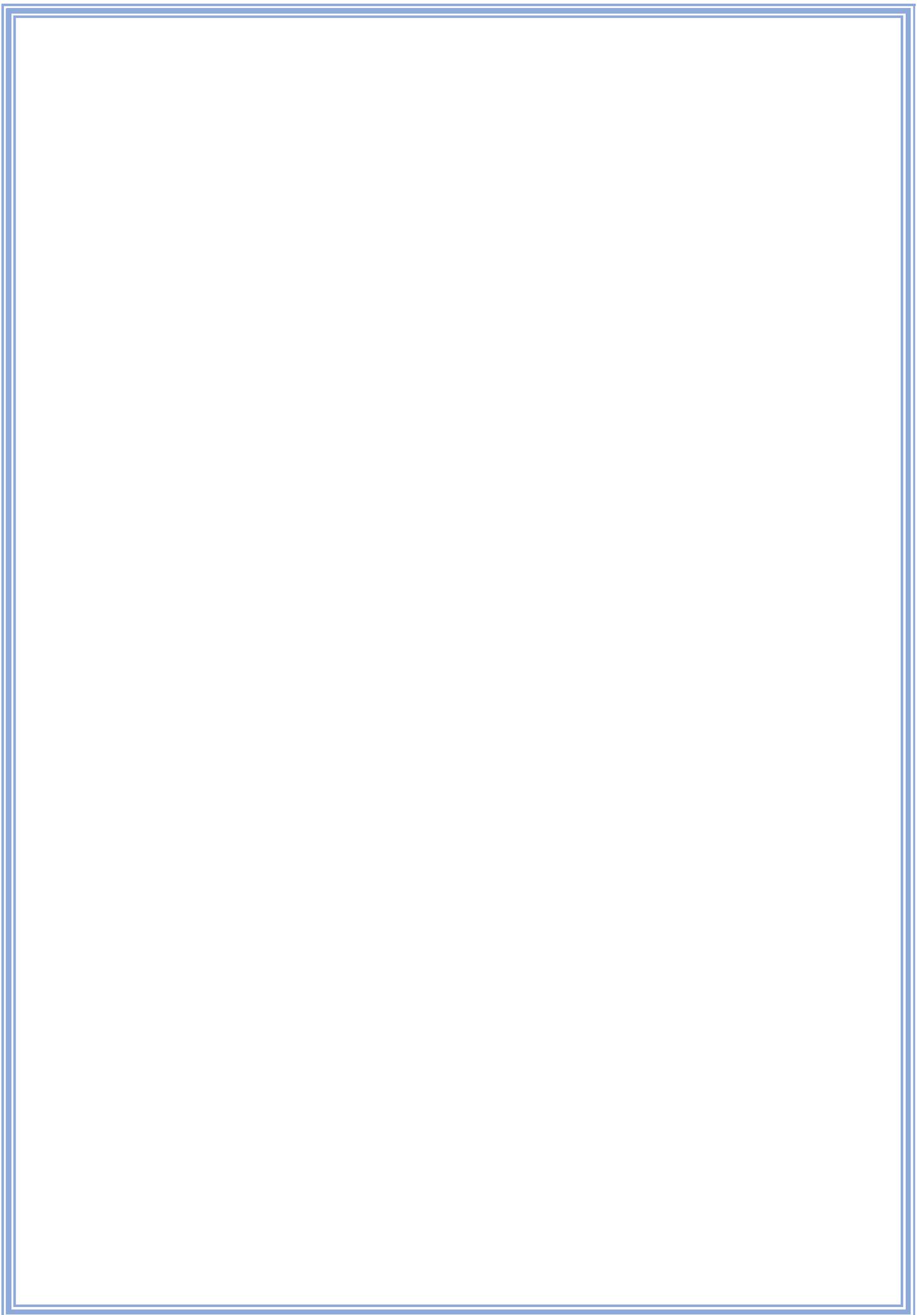
10 वां संस्करण
वर्ष 2024



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), नोएडा

(सचिवालय : भारतीय अन्तर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण, नोएडा)

ए-13, सेक्टर - 1, नोएडा -201301



नोएडा स्वर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), नोएडा

(सचिवालय : भारतीय अन्तर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण, नोएडा)

अंक : 10

वर्ष : 2024

संरक्षक	:	श्री विजय कुमार, आई. ए. एस., अध्यक्ष, भारतीय अन्तर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण एवं. न.रा.का.स., नोएडा
मार्गदर्शक	:	कर्नल हर्षवर्धन सचिव भारतीय अन्तर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण, नोएडा
सम्पादन एवं समन्वय	:	डॉ. प्रज्ञा कांडपाल, हिंदी अधिकारी, भारतीय अन्तर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण और सदस्य सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नोएडा
संपादक मंडल	:	डॉ. अशोक यादव कार्यालय प्रमुख भारतीय मृदा एवं भू उपयोग सर्वेक्षण, सेक्टर-1, नोएडा श्री चंद्र प्रकाश हिंदी अधिकारी, फुटवेयर डिजाइन एंड डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट सेक्टर-62, नोएडा

“पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के निजी विचार हैं। रचना की मौलिकता और अन्य किसी विवाद के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी होंगे।”

सम्पर्क सूत्र :- हिंदी अधिकारी व सदस्य सचिव, न.रा.का.स नोएडा.

भारतीय अन्तर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण, ए-13, सेक्टर -1, नोएडा, उत्तर प्रदेश – 201301

दूरभाष : 0120-2521724

वेबसाइट : www.iwai.nic.in

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या
1.	संरक्षक की कलम	03
2.	मार्गदर्शक की कलम से	04
3.	संपादकीय	05
4.	जन जन की भाषा है हिंदी	07
5.	अंधेरी रात का सन्नाटा	08
6.	लक्ष्य	09
7.	क्रूर प्यार	10
8.	हाँ मैं एक नारी हूँ	13
9.	राष्ट्र निर्माण में स्वच्छ भारत अभियान की भूमिका	14
10.	अपनी व्यथा	18
11.	अच्छा स्वभाव	19
12.	ओलंपिक खेलों में भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन	20
13.	भारतीय संस्कृति की प्रासंगिकता	29
14.	नोएडा की प्रगति की ओर बढ़ते कदम	31
15.	मेरे पापा	32
16.	माँ तेरी नादानियाँ	33
17.	नारी एक संघर्ष	34
18.	समय का विज्ञान	35
19.	संतुलन	36
20.	जरूरत	37
21.	भारत की कला और संस्कृति	38
22.	मेरा शहर	40
23.	हमारे समय की कविता	41
24.	हाँ मैं एक सैनिक की विधवा हूँ	42
25.	डॉक्टर साहब मुझे बेटी नहीं बेटा चाहिए	43
26.	एक एहसास	44
27.	जिंदगी सुन ना	45
28.	कंठस्थ	46
29.	सफर हमसफर	49
30.	सकून	49
31.	नई दिल्ली में चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा हिंदी सम्मेलन की यात्रा	50

संरक्षक की कलम से



श्री विजय कुमार, आई. ए. एस.

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति नोएडा की वार्षिक ई- पत्रिका 'नोएडा स्वर' के इस नवीनतम अंक को लेकर आ रहे हैं। यह पत्रिका हमारा सामूहिक प्रयास है। इसलिए सभी सदस्य कार्यालय इसके लिए बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं नराकास के विभिन्न सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों की सृजनशीलता को तो प्रकट करती ही हैं साथ ही विभिन्न सामाजिक पहलुओं और विषयों के प्रति उनकी भावनाओं और जागरूकता को भी दर्शाती हैं। मैं सभी रचनाकारों की सराहना करता हूं और आशा करता हूं कि हिंदी के प्रति उनका लगाव कार्यालय के काम काज में भी प्रतिबिंबित होगा।

हिन्दी हमारी राजभाषा है, अतः कार्यालय के काम काज में हिन्दी को अपनाना हम सभी का सांविधिक दायित्व है। अन्य अनुदेशों की तरह हमें राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन भी दृढ़ता एवं तत्परता के साथ करना चाहिए। नराकास का उद्देश्य सदस्य कार्यालयों में भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को बढ़ावा देना है। मुझे विश्वास है कि हमारे सभी सदस्य कार्यालय राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए प्रतिबद्ध रहेंगे।

नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ।

(विजय कुमार)

अध्यक्ष, न.रा.का.स., नोएडा

मार्गदर्शक की कलम से



कर्नल हर्षवर्धन

नराकास (कार्यालय) नोएडा की वार्षिक ई- पत्रिका 'नोएडा स्वर' के प्रकाशन पर मुझे हार्दिक प्रसन्नता है। मैं सर्वप्रथम पत्रिका के संपादक मंडल और रचनाकारों को बधाई देता हूँ।

पत्रिका में प्रकाशित लेख एवं कविताएं विभिन्न विषयों को समेटे हुए सुरुचिपूर्ण होने के साथ साथ ज्ञानवर्धक भी हैं। नराकास की विभिन्न गतिविधियों से संबंधित चित्र सदस्य कार्यालयों के कर्मिकों की अभिरुचि और सक्रियता को प्रदर्शित करते हैं।

राजभाषा हिंदी के प्रचार - प्रसार तथा हिंदी के प्रति अभिरुचि जगाने में पत्रिकाएं महत्वपूर्ण योगदान देती है। मुझे आशा है कि नोएडा स्वर का यह अंक पाठकों में न केवल हिंदी के प्रति लगाव बढ़ाएगा बल्कि उन्हें कार्यालय के काम काज में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए प्रेरित भी करेगा।

शुभकामनाओं सहित ।

(कर्नल हर्षवर्धन)

सचिव

भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण, नोएडा

संपादकीय



डॉ. प्रज्ञा कांडपाल

मुझे इस बात की अपार प्रसन्नता है कि नराकास के सदस्य कार्यालयों के सहयोग से नोएडा स्वर का दसवां अंक हमारे सम्मुख है। मैं माननीय अध्यक्ष महोदय तथा उच्चाधिकारियों की हार्दिक आभारी हूँ, जिन्होंने इस पत्रिका के प्रकाशन में हमारा मार्गदर्शन किया। संपादक मंडल के सदस्यों और रचनाकारों को उनके सहयोग और सक्रियता के लिए मेरा साधुवाद।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभाओं को उजागर कर रही हैं, और चित्रों के माध्यम से नराकास की विभिन्न राजभाषायी गतिविधियों की समग्र छवि प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

मुझे आशा है कि नोएडा स्वर का यह अंक आप लोगों को पसंद आएगा और कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा देगा।

हार्दिक शुभकामनाएँ।

प्रज्ञा

(डॉ. प्रज्ञा कांडपाल)

सदस्य सचिव, न.रा.का.स. नोएडा



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति(कार्यालय) नोएडा की 46वीं बैठक दिनांक 29.01.2024 को राष्ट्रीय मध्यम अवधि मौसम पूर्वानुमान केंद्र, सेक्टर-62, नोएडा के सौजन्य से आयोजित की गई।

जन जन की भाषा है हिन्दी

जन जन की भाषा है हिन्दी,
नये भविष्य की आशा है हिन्दी,
हिन्दी हमारे कण कण में है,
जीवन के हर रंग में है हिन्दी।
बचपन से हर किसी के जुबान पर,
जो बिराजमान वो भाषा है हिन्दी
माँ का दुलार और पिता का प्यार है हिन्दी ।
विवेकानंद ने शिकागो मे लोगो का दिल जीता
वो भाषा थी हिन्दी ।
यू.एन. गूँज उठा था तालियों से जब
अटल ने दिया था भाषण हिन्दी में ।
जो अपनापन इस भाषा में है,
और किसी भाषा में नहीं
विदेशों मे भी जो अपनी भाषा लगे
वो भाषा भी है हिन्दी ।
जन जन की भाषा है हिन्दी
नये भविष्य की आशा है हिन्दी
आओ हम हिन्दी को मान देते हैं
विश्व पटल अलग पहचान देते हैं
अब नहीं पीछे हटेंगे हम
अपनी मातृभाषा को बढ़ाएंगे हम
हिन्दी को महान बनाएंगे हम।

राजीव कुमार
कनिष्ठ वैज्ञानिक
राष्ट्रीय जैविक संस्थान



अंधेरी रात का सन्नाटा

कविता मेट्रो शहर में रह रहे उस व्यक्ति विशेष के अकेलेपन की व्यथा है, जो रोजगार और शहर की चकाचौंध से आकर्षित हो यहाँ पहुंचता है लेकिन यहाँ आकर इस भीड़ में कहीं खो सा जाता है। इस कविता के माध्यम से शहर के फ्रीकेपन को छूने का भी प्रयास किया गया है।

ये अंधेरी रात का सन्नाटा,
जाने क्यूँ अपना लगता है,
दिन भर में बिताया हर पल ही,
जाने क्यूँ सपना लगता है,
उस शांत अंधेरे की आत्मा
मुझको जीवन सा लगती है,
यह भीड़ में भागता हुआ जीवन,
मुझे कल्पना सा लगता है।
ये अंधेरी रात का सन्नाटा....
दिन भर कुछ परछाइयों में,
ढूँढा किए हम अस्तित्व,
अरसा हुआ परखते,
ढूँढते हुए हमें व्यक्तित्व,
बस एक कहानी चलती है,
रोज़ एक ही अध्याय आता है,
किसी बेरंग कल्पना में,
मन चलता चल जाता है,
अक्सर हमें यह दिनचर्या,
बस भटकना सा लगता है,
ये अंधेरी रात का सन्नाटा
चलते रहो तुम्हें राह में,
कहीं पर जीवन भी मिलेगा,
बस इसी आस का एहसास दे,
हम खुद को बहला लेते हैं,
चलो कोई बेरंग सा,
एक रंग और भी जान लिया,
बस इसी भ्रम को सच्चा कह,

हम मंज़िल सी पा लेते हैं।
क्या मंज़िल थी, क्या सपने थे,
हम भूलने का प्रयास लिए,
जो राहें भी मिल जाए हमें,
उन राहों का अंदाज़ लिए,
चलते-चलते अक्सर हमें,
फिर से सन्नाटा दिखता है,
और फिर कुछ अपने से लम्हे,
हमें अपने पास बुलाते हैं,
लगता है कुछ देर को,
जाग खुल गई हो जैसे,
लगता है कुछ देर को,
भाग सकते हैं समय से,
फिर लम्हे वो छोड़ हमें,
कहीं दूर निकल जाते हैं,
और फिर से जीवन को जीना,
हमें पिघलना सा लगता है

ये अंधेरी रात का सन्नाटा जाने क्यूँ अपना लगता है,
दिन भर में बिताया हर पल ही जाने क्यूँ सपना लगता है,
उस शांत अंधेरे की आत्मा मुझको जीवन सा लगती है,
यह भीड़ में भागता हुआ जीवन मुझे कल्पना सा लगता है।
ये अंधेरी रात का सन्नाटा....

विमल किशोर
प्रारूपकार
ऊपरी यमुना नदी बोर्ड



लक्ष्य

नदी किनारे बैठे बैठे मैंने देखा जल का खेल
अपनी ही उठती लहरो से काट रहा था पर्वत शहर
कहीं भंवर थे कहीं तरंगे आपस में टकराते थे
इधर-उधर से जो कुछ मिलता उसे भी बहा ले जाते थे
उसी समय में एक पीपल का पता नदी में आन गिरा,
उसे उठाया जब लहरों ने पते ने प्रस्थान किया
लहरों के साथ- साथ वो ऊपर नीचे जाता था
नाच-नाच कर उछल-उछल कर गाता था इतराता था
मैंने पूछा कहाँ चला तू ? लक्ष्य कहाँ पर है तेरा?
इतना खुश तू दिख रहा है बढ़ता हुआ अकेला
पता बोला कहाँ चला हूँ? इसका मुझको भान नहीं
आगे मुझ पर क्या बीतेगी? इसका भी मुझे ज्ञान नहीं
इतना कहते ही वह पत्ता हाय भंवर में आन फंसा
मुझे बचाओ ! मुझे बचाओ ! ओ चिल्लाया वो दीन बड़ा
जिनका लक्ष्य नहीं जीवन में, ऐसे ही खो जाते हैं
जैसे लाख-हजारों पत्ते नदियों में बह जाते हैं ॥

सुरेन्द्र सिंह
बहु कार्यण कर्मचारी
ऊपरी यमुना नदी बोर्ड



11 नवम्बर, 2024 को समाचार पत्रों में एक खबर पढ़ी थी, जिसके अनुसार फरीदाबाद में रजनी नामक एक महिला अपने मकान में मृत अवस्था में मिली। उसी कमरे में उसके दो बच्चों के शव भी जमीन पर मिले। समाचार पत्रों के अनुसार महिला का पति सुबह जब अपने काम पर जा रहा था तब तीनों सही सलामत थे। बच्चे खेल रहे थे और वह महिला किचन में काम कर रही थी। दोपहर को जब वह किसी काम से घर पहुंचा तो घर का दरवाजा अंदर से बंद था और किसी भी तरह से दरवाजा न खुलने पर उसने पुलिस को बुलाया, दरवाजा तोड़ा गया, ऐसी भी खबर है कि पुलिस के पहुंचने से पहले ही महिला के पति ने पड़ोसियों की सहायता से दरवाजा तोड़ दिया था। फिर अंदर यह भयानक दृश्य देखने को मिला। मामले की जांच पुलिस द्वारा की जा रही है जो आत्महत्या और हत्या जैसे सभी पहलुओं पर केंद्रित है। क्योंकि दरवाजा अंदर से बंद था इसलिए हत्या की संभावना कम और आत्महत्या की ज्यादा लग रही है। 3 नवम्बर, 2024 को एक और घटना समाचार पत्रों की सुर्खियों में रही, जिसमें इटावा के सराफा कारोबारी मुकेश वर्मा ने अपनी पत्नी और तीन बच्चों की हत्या कर दी और खुद आत्महत्या के लिए रेल की पटरी पर लेट गया किंतु किसी तरह से बच गया। इस घटना का दिल दहलाने वाला पहलू यह है कि हत्या और आत्महत्या में पति-पत्नी दोनों की सहमति थी। पत्नी ने पति से यह भी कहा कि पहले उसे मार दिया जाए क्योंकि वह बच्चों को तड़पता हुआ नहीं देख सकती। ऐसी ही बहुत सारी अखबार की सुर्खियां हैं जो इसी से मिलती-जुलती वारदात बयां करती हैं।

मैं यहां पर जिस पहलू पर बात करना चाहता हूं, वह किसी भी माता-पिता या अभिभावक द्वारा आत्महत्या के मामले में अपने बच्चों के जीवन बारे में भी फैसला करने के अधिकार का है। यूँ तो आत्महत्या के मामले में व्यक्ति स्वयं अपने बारे में भी निर्णय नहीं ले सकता। उसे भी, ऐसा करने से कानून रोकता है और आत्महत्या के प्रयास को अपराध मानकर अपराधी को दंडित भी करता है, किंतु यदि कोई यह फैसला किसी अन्य व्यक्ति के बारे में लेता है, चाहे वह उसकी संतान ही क्यों न हो, तो ऐसे अधिकार की समीक्षा करने की जरूरत है। क्या वास्तव में माता-पिता को यह अधिकार है कि वह आत्महत्या के निर्णय में अपने बच्चों को अपने निर्णय का भागीदार बना ले? क्या किसी भी व्यक्ति को किसी और के जीवन के बारे में यह निर्णय लेने का अधिकार होना चाहिए कि उसे आगे जीना है या नहीं?

जब भी माता-पिता या अभिभावक ऐसा करते हैं तो उसके पीछे सबसे ठोस वजह वे यह मानते हैं, कि उनके बाद बच्चों की परवरिश या देखभाल कैसे होगी, उनका जीवन कष्टकारी हो जाएगा, उनको ये दुनिया जीने नहीं देगी या वे उन्हें माता-पिता की अनुपस्थिति और विपरीत परिस्थितियों में बहुत दुख झेलना पड़ेगा। किसी भी व्यक्ति की यह सोच कि उसके बिना किसी दूसरे व्यक्ति का जीवन संभव ही नहीं है या वह किसी के जीने के लिए अपरिहार्य शरूख है, कहाँ तक सही है? समाज में ऐसे बच्चों की कमी नहीं है जिन्हें या तो उनके माता-पिता ने जन्म देते ही त्याग दिया था या जिनके माता और/या पिता की बहुत जल्दी मृत्यु हो गई थी। ऐसे बच्चे भी अपने जीवन में सफल होते हैं और कई बार यह भी देखने में आया है कि संघर्ष ऐसे बच्चों को मजबूत बना देता है और वे उन बच्चों से कहीं अधिक कामयाबी पा लेते हैं जिनका बचपन सुविधाओं में बीतता है।

ऐसा भी नहीं है कि जिन बच्चों के माता-पिता होते हैं उन्हें जीवन से कोई शिकायत ही नहीं होती। सुख-दुख भी एक तुलनात्मक भाव से उत्पन्न मानसिकता ही है। संपन्न परिवारों के बच्चे भी अपने माता पिता से बिल्कुल और पूरी तरह संतुष्ट नहीं होते। कई बार उन्हें माता-पिता अपने सपनों को साकार करने में अवरोध जैसे दिखाई देते हैं। दूसरी ओर, कुछ बच्चे उत्तरदायित्व के बोध से बहुत कम उम्र में नौकरी करते हुए और अपने परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए भी देखे जा सकते हैं। अतः यह सोच रखना कि हमारे बिना बच्चे जी नहीं पायेंगे, खुद को गलतफहमी में रखने या किसी और के जीवन में अपना महत्व प्रतिपादित करने की अनुचित कोशिश से अधिक कुछ नहीं है। जिसने भी इस पृथ्वी पर जन्म लिया है उसे कुदरत ने अपना जीवन जीने की ऊर्जा और साधनों से युक्त करके ही भेजा है। फिर ऐसा व्यक्ति जो जीवन से अपनी जंग स्वयं हार चुका है, उसे किसी अन्य को जंग में न उतरने देने का अधिकार ही नहीं हो सकता। आत्महत्या चुनने वाला व्यक्ति निश्चित रूप से निराशा और अवसाद का शिकार होता है, और ऐसे व्यक्ति से हम आम जीवन में भी दूरी बनाकर रखते हैं क्योंकि वह अपनी सोच से हमारी सोच को भी दुष्प्रभावित करता है। अच्छे जीवन के लिए आशावादी और सकारात्मक होना बेहद जरूरी होता है। निराशावादी और नकारात्मक प्रवृत्ति के व्यक्ति को किसी मासूम बच्चे के जीने या मरने का अधिकार कैसे दिया जा सकता है?

इस विचार से कि हमारे बाद बच्चों का जीवन बहुत दयनीय हो जायेगा और महिलाओं के मामले में यह विचार कि मेरे बाद पति दूसरी शादी कर लेगा और सौतेली माँ मेरे बच्चे के साथ दुर्व्यवहार करेगी, उसे दुखी रखेगी, किसी बच्चे की हत्या कर देना एक

जघन्य अपराध है। ऐसे लोग जितने भी कष्टों की कल्पना करते हैं उनमें से बहुत से कष्ट तो ऐसे होते हैं जो खुद उनके लालन पालन में भी बच्चे को भोगने पड़ते और उन सारे कष्टों की तुलना में उस बच्चे की हत्या सबसे बड़ा कष्ट है। यह भी जरूरी नहीं है कि हर सौतेली मां फिल्मों जैसी ही खलनायिका ही हो। कई बार ऐसी मां उस पूर्वाग्रह की भी शिकार होती हैं जो सौतेली मां को लेकर समाज में व्याप्त है। आप बच्चे से यदि उसकी इच्छा पूछेंगे तो वह कभी भी मरने का विकल्प स्वीकार नहीं करेगा। किसी बच्चे की इच्छा को जाने बिना यह तय कर लेना कि अब उसे आगे नहीं जीना है, इस दुनिया का सबसे क्रूरतम अपराध है जो उसके साथ धोखे से किया जाता है। अफ़सोस की बात यह है कि उसके साथ यह नाइंसाफी उसकी भलाई के नाम पर की जाती है।

यदि आत्महत्या ही जीवन की सारी समस्याओं का एकमात्र समाधान है तो यह विकल्प तो बच्चों के पास तब भी उपलब्ध रहेगा जब उसके माता-पिता नहीं रहेंगे। अतः माता-पिता को यह उस बच्चे पर छोड़ देना चाहिए जिसकी वे हत्या कर रहे हैं। जिन बच्चों के माता-पिता नहीं हैं, ऐसे बच्चों को गोद लेने वाले लोगों की कमी नहीं है। अनेक संतानहीन दंपति हैं जो उन्हें गोद लेने के लिए अनाथालयों की प्रतीक्षा सूची में दर्ज हैं। बहुत से एनजीओ और सरकार भी ऐसे बच्चों की देखभाल करने के लिए उपलब्ध हैं। स्पष्ट है कि जीवन के लिए कोई भी व्यक्ति किसी पर निर्भर नहीं है। जब भी कोई व्यक्ति अपना दायित्व पूरा नहीं करता तो समाज के बीच से कोई न कोई उस दायित्व का निर्वहन करने के लिए सामने आ जाता है।

आत्महत्या करने वाले माता-पिता या अभिभावक द्वारा अपने से पहले अपने बच्चों की हत्या करना एक जघन्य अपराध है जो किसी अबोध और मासूम बच्चे के खिलाफ किया जाता है। इसे अपने प्रेम या सहानुभूति का नाम देना उस अपराध का औचित्यीकरण मात्र है जो हकीकत में न केवल एक घृणित अपराध है, अपितु माता-पिता के उस पुनीत दायित्व से भी पलायन है जिसके लिए उन्हें भगवान का दर्जा दिया जाता है। उस अबोध बच्चे को, जो माता-पिता की गोद में बैठकर और उनके साये में खड़े होकर खुद को सर्वाधिक सुरक्षित महसूस करता है, यदि माता-पिता द्वारा ही प्यार के नाम पर मार दिया जाता है तो इसे कौन सा प्यार कहा जाए और कैसे प्यार कहा जाए? किसी बच्चे से नफरत करने वाला या उससे दुश्मनी रखने वाला व्यक्ति भी उस बच्चे का जो अधिकतम बुरा कर सकता है, वह उसकी हत्या ही है। जब उसके माता-पिता उसकी हत्या करते हैं, तो वे उस दुश्मन से अलग कैसे हुए? सिर्फ इसलिए कि उनकी मंशा कुछ अलग है? क्या उसी मंशा के पीछे एक बच्चे के साथ उनका छल और धोखा भी शामिल नहीं है? जो व्यक्ति अपने जीवन के संघर्ष से डर गया है, पराजित हो गया है उसे अपनी पराजय में उस जीवन को शामिल करने का कोई अधिकार नहीं है, जिसे अभी अपना संघर्ष प्रारम्भ करना भी शेष है। अतः समाज में ऐसे माता-पिता या अभिभावकों की निंदा किया जाना आवश्यक है और इस कृत्य को घृणित अपराध के रूप में प्रस्तुत किया जाना आवश्यक है ताकि किसी भी आत्महत्या करने वाले व्यक्ति के मन में खुद मरने से पहले अपने बच्चों को मारने का खयाल भी न आए। पृथ्वी पर मौजूद हर व्यक्ति को यह समझने की भी आवश्यकता है कि ये दुनिया किसी के बिना खत्म नहीं होती और यदि किसी दुर्घटना में उसकी आज ही मृत्यु हो जाए तो उसके साथ उसके परिवार के उन सदस्यों में से कोई भी नहीं मरेगा जिनके बारे में वह सोचता है कि उसके बिना वे जी नहीं सकते।

डॉ. ईश्वर सिंह
राजभाषा अधिकारी
तेल उद्योग सुरक्षा निदेशालय
सेक्टर-73, नोएडा





नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति(कार्यालय) नोएडा की 46वीं बैठक के दौरान प्रतिभा पुरस्कार 2023 प्राप्त करते विद्यार्थी

हाँ, मैं एक नारी हूँ

पैदा होने से पहले ही जिसे नकारा गया है,
दुनिया में आने के बाद जिसे मारा गया है।
ऐसी मैं भगवान की रचना न्यारी हूँ,
हाँ, मैं एक नारी हूँ।

घर के बेटे को सब पूछते हैं, सब की अनदेखी मैं सहती
हूँ
सब देखकर भी कहाँ कुछ मैं कहती हूँ।
क्यों नहीं मैं भी बेटे की तरह सबकी दुलारी हूँ,
हाँ, मैं एक नारी हूँ।

यू तो कहते हैं सब हो तुम देवी का स्वरूप,
फिर भी औलाद में चाहिये सबको बेटे का रूपा।
क्यों सिर्फ नौ दिनों के लिये ही मैं प्यारी हूँ,
हाँ, मैं एक नारी हूँ।

बेटे को पढ़ाते हैं कहकर करेगा वो घर को आबाद,
कहा जाता है मुझसे करना जो करना हो शादी के बाद।
क्योंकि अभी तो मैं कंवारी हूँ,
हाँ, मैं एक नारी हूँ।

शादी में माँगते हैं गाड़ी और पैसा,
फिर भी कहते हैं तुम्हारे यहाँ से मिला क्या है ऐसा।
ऐसे अनगिनत दहेज के लिये, कितनी बार गई मैं मारी हूँ,
हाँ, मैं एक नारी हूँ।

आसमां को रख के सर,
जा चुकी हूँ चाँद पर।
लेकिन दुनिया के लिये मैं अब भी बेचारी हूँ,
हाँ, मैं एक नारी हूँ।

उठाती हूँ जो कदम खुद को आगे बढ़ाने को,
कोशिश करते हैं सब मेरा मनोबल गिराने को।
गैरों से ज्यादा अपनों से ही मैं हारी हूँ,
हाँ, मैं एक नारी हूँ।

काम करूँ दफ्तर में या जाऊँ किसी सफर में,
क्यों मैं सुरक्षित नहीं हूँ अपने ही घर में।
बस, अपमान अब न सहूँगी मैं, सहकर चुप न रहूँगी मैं,
सुरक्षा और सम्मान की मैं भी अधिकारी हूँ,
हाँ, मैं एक नारी हूँ।

कंधे से कंधा मिला कर चलती हूँ,
जितनी बार गिरती हूँ खुद ही संभलती हूँ।
मौका मिले तो सब पर भारी हूँ,
हाँ, मैं एक नारी हूँ।

बाहर जाकर ऑफिस भी संभालती हूँ,
घर आकर घर को भी निखारती हूँ।
नारी होना यू तो बिल्कुल भी आसान नहीं,
फिर भी उस ईश्वर की मैं आभारी हूँ,
हाँ, मैं एक नारी हूँ।

निधि अग्रवाल

आशुलिपि सहायक

वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान



राष्ट्र निर्माण में स्वच्छ भारत अभियान की भूमिका

कहा जाता है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है और स्वस्थ मन ही स्वस्थ समाज का निर्माण करता है। मगर यह स्वस्थ तन-मन-समाज बने कैसे? स्वच्छ भारत अभियान इसी सवाल का जवाब है। स्वच्छ भारत अभियान का उद्देश्य पूरे देश में स्वच्छता] स्वास्थ्यकर प्रथाओं और सफाई को बढ़ावा देना है। इस अभियान के तहत न सिर्फ ठोस कचरा के प्रबंधन को लेकर जागरूकता फैलाई जाती है] बल्कि खुले में शौच को भी हतोत्साहित किया गया है] जिसके कारण अब लोग साफ-सफाई को ज्यादा पसंद करने लगे हैं। इसी तरह] गंदगी को साफ करने की मानसिकता भी लोगों में दिखने लगी है] जिससे हमारा देश अब कहीं अधिक स्वच्छ दिख रहा है और विदेशी पर्यटक काफी तादाद में भारत की ओर रुख कर रहे हैं।

स्वच्छता लोगों को गंदगी से पैदा होने वाली बीमारियों से बचाती है। इससे विभिन्न रोगों के उपचार में खर्च होने वाला पैसा बचता है। स्वच्छता स्वास्थ्य के साथ समृद्धि की भी वाहक है। खराब स्वच्छता के कारण भारत को भारी नुकसान उठाना पड़ता था। विश्व बैंक के एक अध्ययन में अनुमान लगाया गया है कि खराब स्वच्छता के कारण भारत को 2006 में अपने सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 6.4% का नुकसान हुआ, जो सालाना 38 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक है। ये नुकसान मुख्य रूप से स्वास्थ्य लागत, उत्पादकता में कमी और शिक्षा के अवसरों के नुकसान के कारण हुआ।

शौचालय का अभाव] महिलाओं की शारीरिक और मानसिक अस्वस्थता का कारण रहा है। यह उनके आत्मसम्मान और सुरक्षा पर भी बहत आघात पहुंचाता है। खुले में शौच की विवशता के चलते महिलाएं कम भोजन और अल्पमात्रा में जल ग्रहण करती हैं ताकि उन्हें दिन के उजाले में शौच न जाना पड़े] नतीजतन उनका शरीर बीमारियों का घर बन जाता है। निःसंदेह खुले में शौच से यौन हिंसा की आशंका बढ़ जाती है] जिससे महिलाओं को शारीरिक और मानसिक पीड़ा पहुंचती है। उन्हें खुले में शौच जाने के कारण शर्मिंदगी और छींटाकशी का सामना करना पड़ना था। इन तमाम तकलीफों पर लगाम लगाने के लिए स्वच्छ भारत अभियान की जब शुरुआत हुई तो अमूमन सभी को लगा कि यह नारों के शोर तक सीमित होकर रह जाएगा] परंतु यह जन-जन की आवाज बन गया। इस अभियान ने यही बताया कि कैसे किसी कार्यक्रम को लागू करने की सरकार की प्रतिबद्धता पूरे परिदृश्य को बदल देती है। कम से कम इस प्रतिबद्धता की तो सराहना होनी ही चाहिए। यूनिसेफ की रिपोर्ट के अनुसार अब देश की 90% महिलाएं सुरक्षित महसूस कर रही हैं। स्वच्छ भारत मिशन के कारण महिलाओं में संक्रमण से होने वाली बीमारियों में भी काफी कमी आई है। इसके अलावा लाखों स्कूलों में लड़कियों के लिए अलग से शौचालय बनने से उनके स्कूल छोड़ने की दर में कमी आई है।

यूनिसेफ की एक रिपोर्ट के अनुसार स्वास्थ्य पर खर्च में बचत के कारण खुले में शौच मुक्त गांव में एक परिवार द्वारा सालाना 50,000 रुपये की बचत की गई। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (2019-21) के अनुसार कुल स्वास्थ्य व्यय वित्त वर्ष 2015 में 62.6% से घटकर वित्त वर्ष 2020 में 47.1% हो गया। स्वास्थ्य सेवाओं पर कम खर्च का सीधा संबंध गुणवत्तापूर्ण जीवन में निवेश है] जो किसी भी देश के सर्वांगीण विकास का एक प्रमुख सूचक है।

अपर्याप्त स्वच्छता डायरिया, हैजा और टाइफाइड जैसी जलजनित बीमारियों का एक प्रमुख कारण है, जिससे विशेष रूप से पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों में रुग्णता और मृत्यु दर अधिक होती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का यह आंकड़ा स्वच्छ भारत अभियान की सफलता को बयान करता है कि 2014 से 2019 के बीच डायरिया आदि से होने वाली तीन लाख मौतों को रोका गया। हाल ही में आई नेचर रिपोर्ट के अनुसार, स्वच्छ भारत अभियान की वजह से हर साल 60-70 हजार बच्चों का मृत्यु से बचाव होने से शिशु मृत्यु दर में उल्लेखनीय कमी आई है।

खुले में शौच और अनुचित अपशिष्ट प्रबंधन पर्यावरण क्षरण में योगदान करते हैं। अनुपचारित सीवेज, जल निकायों को दूषित करता है, समुद्री और तटीय पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान पहुंचाता है, और मिट्टी तथा हवा को प्रदूषित करता है, जिससे स्वास्थ्य जोखिम और बढ़ जाता है। यूनिसेफ की एक रिपोर्ट के अनुसार स्वच्छ भारत अभियान ने पर्यावरण को बचाने में मदद की क्योंकि खुले में शौच वाले गांवों में मनुष्यों के कारण भू-जल संदूषण की संभावना 12.70 गुना कम थी।

विश्व भर में हुए सैकड़ों शोधों का यही निष्कर्ष है कि खुले में शौच जीवन के लिए घातक है। वर्ल्ड बैंक की रिपोर्ट बताती है कि खुले में शौच से बच्चों पर सीधा प्रभाव पड़ता है। मानव मल में लाखों वायरस] बैक्टीरिया और परजीवी घटक उपस्थित होते हैं जो डायरिया और जल जनित अनेक बीमारियों को जन्म देते हैं। ये बीमारियां बच्चों के पेट की अंदरूनी सतह को बारंबार क्षति पहुंचाता है जिससे पोषक तत्वों को हजम करने की उनकी शक्ति क्षीण हो जाती है और वे कुपोषण से लड़ने की क्षमता खो देते हैं।

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार वर्तमान में देश के 82.5% परिवारों में शौचालय की सुविधा है। जबकि 2004-05 में मात्र 29% परिवारों में ही शौचालय थे। यह परिणाम उस आह्वान की परिणति है जो 15 अगस्त 2014 को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने देश को संबोधित करते हुए किया था। प्रधानमंत्री मोदी ने 'पहले शौचालय फिर देवालय' के अपने एजेंडे को लागू करने के लिए उसी साल महात्मा गांधी की जन्मतिथि अर्थात दो अक्टूबर से स्वच्छ भारत अभियान शुरू करने की घोषणा की। स्कूलों में छात्राओं के लिए शौचालय बनाने की योजना को 15 अगस्त से ही शुरू कर दिया। प्रधानमंत्री ने स्वच्छ भारत मिशन को एक बड़े जन आंदोलन में बदलने के लिए सफाई मित्रों] धार्मिक गुरुओं] एथलीटों] प्रसिद्ध हस्तियों] गैर सरकारी संगठनों और मीडिया के सहयोग का आह्वान किया। प्रधानमंत्री ने इसमें सहयोग देने के लिए राज्य सरकारों के साथ-साथ निजी क्षेत्र का भी आह्वान किया कि उन्हें सामाजिक दायित्व के तहत शौचालय निर्माण को प्राथमिकता देनी चाहिए। इसका परिणाम यह हुआ कि मात्र 10 वर्षों में 12 करोड़ शौचालयों का निर्माण हुआ और महात्मा गांधी की 150वीं जयंती अर्थात दो अक्टूबर] 2019 से पहले ही भारत खुले में शौच से मुक्त देश घोषित हो गया।

'स्वच्छ भारत अभियान' ने अक्टूबर 2014 में जो हुंकार भरी उसका सकारात्मक नतीजा सबके सामने है। यूनिसेफ की एक रिपोर्ट के अनुसार स्वच्छ भारत मिशन से 1.25 करोड़ लोगों को किसी न किसी रूप में रोजगार मिला है। देश में करोड़ों शौचालयों के निर्माण से राजमिस्त्री] प्लंबर] मजदूर जैसे लाखों लोगों को रोजगार मिला है। स्वच्छ भारत अभियान ने महिला राजमिस्त्रियों की एक नई पीढ़ी तैयार की है। सफाई कार्य में शामिल लोगों को अब सम्मान की दृष्टि से देखा जाने लगा है। स्वच्छ भारत अभियान ने चक्रीय अर्थव्यवस्था को भी बढ़ावा दिया है। इसके तहत घरों से निकलने वाले कचरे से अब खाद] बायोगैस] बिजली और सड़क निर्माण में इस्तेमाल होने वाले चारकोल जैसे पदार्थों का उत्पादन किया जा रहा है। गोबरधन योजना के तहत गांवों में बायोगैस संयंत्र लगाए जा रहे हैं। जहां पशु अपशिष्ट को बायोगैस में बदला जा रहा है। कुल मिलाकर स्वच्छ भारत अभियान देश को एक नई पहचान देने के साथ-साथ विकास को भी नई दिशा देने में सफल दिख रहा है।

स्वच्छ भारत अभियान की सफलता के कारण सतत विकास लक्ष्य 6.2 की प्राप्ति हो सकी है। स्वच्छ भारत अभियान, सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी), विशेष रूप से सतत विकास लक्ष्य 6 स्वच्छ जल और स्वच्छता, जिसका उद्देश्य 2030 तक 'सभी के लिए पानी तथा स्वच्छता की उपलब्धता और सतत प्रबंधन सुनिश्चित करना' है, के साथ निकटता से जुड़ा हुआ है। वैश्विक समय सीमा से 11 साल पहले 2019 में खुले में शौच मुक्त (ओडीएफ) घोषित होने की भारत को उपलब्धि न केवल राष्ट्रीय बल्कि वैश्विक सतत विकास लक्ष्यों के प्रति देश की प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

सतत विकास लक्ष्य 6 का लक्ष्य- 6.2 खुले में शौच को समाप्त करने और सभी के लिए पर्याप्त तथा समान स्वच्छता तक पहुंच प्रदान करने पर जोर देता है। स्वच्छ भारत अभियान के तहत 11.6 करोड़ रुपये से अधिक घरेलू शौचालयों के निर्माण ने सीधे इस लक्ष्य को प्राप्त करने में योगदान दिया।

स्वच्छ भारत अभियान, सतत विकास लक्ष्य-3 (अच्छा स्वास्थ्य और आरोग्यता) का भी समर्थन करता है, क्योंकि बेहतर स्वच्छता, जलजनित बीमारियों और बाल मृत्यु दर को कम करती है। अध्ययनों से पता चलता है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार स्वच्छ भारत अभियान ने डायरिया के कारण सालाना 3 लाख बच्चों की मौत को रोकने में मदद की है।

यह अभियान सतत विकास लक्ष्य-5 (महिला-पुरुष समानता) के साथ भी संरेखित है। यह सुनिश्चित करता है कि महिलाओं की गरिमा और सुरक्षा को बढ़ाने के लिए उन्हें सुरक्षित और निजी स्वच्छता सुविधाएं सुलभ हों।

स्वच्छ भारत अभियान को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा मिली है। इसे अपने स्वच्छता मानकों को बेहतर बनाने का लक्ष्य रखने वाले अन्य देशों के लिए एक माडल के रूप में देखा गया है। यह अभियान राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक है जो स्वच्छता और सार्वजनिक स्वास्थ्य के प्रति भारत की प्रतिवद्धता को दर्शाता है।

स्वच्छता अभियान के सकारात्मक परिणाम की पुष्टि पेयजल और स्वच्छता विभाग एवं जल शक्ति मंत्रालय की सहायता से यूनिसेफ और बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन की रिपोर्ट 'एक्सेस टू टायलेट्स एंड द सेफ्टी कनवीनियंस एंड सेल्फ-रेस्पेक्ट आफ वूमेन इन इंडिया' शीर्षक रिपोर्ट से होती है। इस रिपोर्ट के अनुसार शौचालय बनने के बाद 93% महिलाओं ने कहा कि उन्हें शौच करते समय जानवरों द्वारा नुकसान पहुंचाए जाने] संक्रमण होने और रात के अंधेरे में शौचालय जाने में डर नहीं लगता। महिलाओं ने यह भी माना कि वे अब तनाव मुक्त और आत्मसम्मान की भावना महसूस करती हैं। इससे भी इनकार नहीं किया जा सकता कि खुले में शौच 'आत्मग्लानि' बढ़ाता और 'आत्मगौरव' को घटाता है। ये सशक्तिकरण में बाधक तत्व हैं। आर्थिक स्वावलंबन की पहली सीढ़ी स्वाभिमान है। इस दृष्टि से स्वच्छ भारत मिशन ने महिला सशक्तिकरण में अभूतपूर्व योगदान दिया है।

स्वच्छ भारत अभियान अब एक राष्ट्रीय आंदोलन का रूप ले चुका है। इसका संदेश लोगों के अंदर उत्तरदायित्व की एक अनुभूति जगा चुका है। अब जबकि लोग पूरे देश में स्वच्छता के कार्यों में सक्रिय रूप से सम्मिलित हो रहे हैं, तो महात्मा गांधी द्वारा देखा गया 'स्वच्छ भारत' का सपना साकार होने लगा है। उनका यह कथन उल्लेखनीय है कि 'स्वच्छता स्वंत्रता से अधिक महत्वपूर्ण है।' हालांकि] इस अभियान के मार्ग में कुछ रुकावटें भी हैं। सबसे बड़ी बाधा तो पान मसाला] गुटका] तंबाकू आदि के उपयोग के बाद की जाने वाली गंदगी है। इस गंदगी से हर जगह गली-चौराहे अटे पड़े रहते हैं। सरकार यदि भारत को विकसित देशों जैसा साफ-सुथरा बनाना चाहती है] तो वह पान मसाला] गुटका] तंबाकू आदि पर प्रतिबंध लगाए।

शहरों में कचरे के पहाड़ खड़े हो गए हैं] उन्हें कम करने में सफलता नहीं मिल रही है। कई गांव खुले में शौच से मुक्त घोषित किए जा चुके हैं] लेकिन हकीकत में वहां हमें आज भी ऐसे कुछ लोग मिल जाएंगे] जिनके लिए घर से बाहर निवृत्त होना मजबूरी है। फिर] कई जगहों पर तो शौचालय बना दिए हैं] लेकिन इनके लिए जरूरी सुविधाएं बहाल नहीं की गई हैं। नतीजतन] ऐसे शौचालय महज शोभा बढ़ाने के काम आ रहे हैं। कुछ ऐसा ही हाल साफ-सफाई और कचरा प्रबंधन का है। कचरे में आग लगा दी जाती है। यह धुआं सांसों के जरिये हमारे शरीर का कितना नुकसान करता है] यह बताने की जरूरत नहीं है। इसी तरह] नालों में भी गंदगी यूं ही बहती रहती है। उनकी सुध लेने को कोई तैयार नहीं होता। यही गंदगी बरसात के दिनों में जलभराव का कारण बनती है और उफनकर सड़कों पर आ जाती है] जिससे गुजरना पैदल चलने वालों के लिए नरक पार करने से कम कष्टदायक नहीं होता। वास्तव में] स्वच्छ भारत अभियान तभी पूरी तरह

सफल हो सकता है] जब देश का हरेक आदमी स्वच्छता की अहमियत समझे] जब साफ-सफाई को हम अपने जीवन में उतार लें और अपनी दिनचर्या का इसे हिस्सा बनाएं।

इससे इनकार नहीं किया जा सकता है कि अब आम तौर पर सार्वजनिक स्थलों में साफ-सफाई देखने को मिलती है। बीते दस वर्षों में स्वच्छ भारत अभियान ने अपना एक प्रभाव छोड़ा है और लोगों को साफ-सफाई के प्रति जागरूक भी किया है। इस जागरूकता के चलते सार्वजनिक स्थलों को साफ-स्वच्छ रखने को लेकर लोगों में एक जिम्मेदारी का भाव भी आया है।

स्वच्छ भारत अभियान की सफलता न केवल इसके द्वारा निर्मित बुनियादी ढांचे में निहित है। बल्कि इसके द्वारा स्थापित मूल्यों- स्वच्छता को प्रत्येक नागरिक की साझा जिम्मेदारी बनाने में भी निहित है। यह हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है कि हम अब तक की गई प्रगति को बनाए रखें और भावी पीढ़ियों के लिए स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण सुनिश्चित करें। जैसे-जैसे देश 2047 तक विकसित भारत बनने के लक्ष्य की ओर काम कर रहा है उम्मीद है कि अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी तक विकसित भारत के निर्माण में स्वच्छ भारत अभियान सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार, महिलाओं को सशक्त बनाने, पर्यावरण की रक्षा करने और आर्थिक विकास को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

राजेश कुमार कर्ण

आशुलिपि सहायक

वी वी गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय) नोएडा की 46वीं बैठक के दौरान नोएडा स्वर के 9 वें अंक का विमोचन

अपनी व्यथा

पल-पल क्षण क्षण सोचता रहा
कि क्या कविता बनाऊं
तो चलो क्यों ना आपको मैं
अपनी यही व्यथा सुनाऊं।

हिंदी है माँ सी हम उसके बच्चे
थोड़े कच्चे थोड़े पक्के
उस मां की मूरत को आज
मैं कैसे सजाऊं
चलो आपको मैं अपनी यही व्यथा सुनाऊं।

आधे अधूरे बनते बिगड़ते
अक्षरों के भंवर में
शब्द कौन से हो कैसे हो
इस असमंजस में
सूर्योदय के नभपटल जैसा
कोरा कागज हो चित्र फलक
लेखनी की कूची से उस पर
रंग कैसे बिखराऊं
चलो आपको मैं अपनी यही व्यथा सुनाऊं।

यह लेखनी है या कर्म है मेरा
भाव है या विस्मित हो रहा मन मेरा
सूर्यास्त भी हो चला
दिन लिखना फिर भी बाकी रहा
इन सब बातों के बीच
कोई कविता बने भी तो कैसे
वैभव की इस उलझन को
मैं कैसे समझा पाऊं
चलो आपको मैं अपनी यही व्यथा सुनाऊं।

वैभव विकास गोविल
आयकर अधिकारी
कार्यालय प्रधान आयकर आयुक्त



अच्छा स्वभाव

लालच को अपने मन में बसाया ना कीजिए
स्वार्थी को अपना मित्र बनाया ना कीजिये
रहिये मगन उसी में जो दिया है प्रभु ने आपको
दूसरों के मॉल दौलत देख के ललचाया ना कीजिये

माना की याद रख नहीं सकते हर एक को
जो माँ बाप हैं उन्हें तो भुलाया ना कीजिये
पाला है बड़ी नाज़ों से माँ बाप ने आपको
बुढापे में तंग नज़रो से दिल उनका दुखाया ना कीजिये

मिलती है सफलता यदि जीवन में आपको
दोस्तों सम्बन्धियों से दूर जाया ना कीजिये
सम्बन्ध उन्ही से रखिये जो है दिल के करीब
धूर्तों को अपने पास बिठाया ना कीजिये
कुसंगति और नशे से दूर रहना है आपको
ब्यर्थ में अपना जीवन गवाया ना कीजिये

करिये नित्य योग घर के सभी लोग
बीमारी को अपने पास बुलाया ना कीजिये
जाएँ ससुराल पत्नी संग मजे से सभी लोग
बहनो के घर आने से मुरझाया ना कीजिये

मिलती है सुख शांति बढ़ती है उम्र आपकी
मेहमानो के घर आने से घबराया ना कीजिये
आलस को अपने पास लाया ना कीजिये

मोबाइल में अपना वक़्त गवाया ना कीजिये
थोड़ा सा निवेदन है मेरी आपसे यही
इमरान को अपने दर से हटाया ना कीजिये

डॉ. मोहम्मद इमरान,
लेबोरेटरी तकनीशियन
राष्ट्रीय जैविक संस्थान



ओलंपिक खेलों में भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन

"शानदार शतक"

आधुनिक ओलंपिक खेलों की शुरुआत 1896 में यूनान (एथेंस) में हुई। इन खेलों का आयोजन एवं नियंत्रण अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति करती है। इस प्रतियोगिता के ध्वज में प्रतीक के रूप में पाँच चक्र एक-दूसरे से मिले हुए दर्शाए गए हैं, जो विश्व के पाँच महाद्वीपों का प्रतिनिधित्व करने के साथ ही विश्वव्यापी खेल भावना के भी सूचक हैं। इन पाँच चक्रों का रंग नीला, पीला, काला, हरा एवं लाल होता है। प्रत्येक रंग एक महाद्वीप का प्रतीक होता है। इनमें नीला चक्र यूरोप, पीला चक्र एशिया, लाल चक्र अमेरिका, काला चक्र अफ्रीका और हरा चक्र ऑस्ट्रेलिया का प्रतिनिधित्व करता है। वर्ष 1916, 1940 और 1944 में विश्व युद्ध के कारण ओलंपिक नहीं हुए।

पेरिस ओलंपिक 2024 में एथलीटों ने एथलेटिक ट्रैक पर पारंपरिक मार्च के बजाय नाव परेड में हिस्सा लिया। परंपरा के अनुसार प्राचीन ओलंपिक के जनक यूनान का दल खिलाड़ियों की परेड में सबसे पहले आया, इसके बाद आईओसी शरणार्थी ओलंपिक टीम आई जिसमें कई देशों के शरणार्थी शामिल थे। फिर मेजबान देश फ्रांस और अगले दो ओलंपिक खेलों के मेजबान अमेरिका एवं ऑस्ट्रेलिया को छोड़कर अन्य सभी देशों ने मेजबान देश फ्रांस की भाषा में उनके नाम के आधार पर परेड में हिस्सा लिया। 2024 के मेजबान के रूप में फ्रांस की नाव सबसे अंत में आई और उससे पहले क्रमशः 2028 के ओलंपिक खेलों की मेजबानी करने वाले संयुक्त राज्य अमेरिका और 2032 के ओलंपिक खेलों की मेजबानी करने वाले ऑस्ट्रेलिया की नाव थी। यूक्रेन में युद्ध के कारण रूस और बेलारूस के एथलीटों को पेरिस ओलंपिक खेलों में भाग लेने से रोक दिया गया था। भारतीय दल की अगुवाई शरत कमल (टेबल टेनिस) और पी.वी. सिंधु (बैडमिंटन) ने की। ओलंपिक खेलों में भारत का अब तक का यह दूसरा सबसे बड़ा दल था जिसमें 47 महिला खिलाड़ियों सहित कुल 117 खिलाड़ी शामिल थे। समापन समारोह में भारतीय दल के ध्वजवाहक पीआर श्रीजेश और, मनु भाकर रहे।

इस बार के ओलंपिक खेलों में भी भारत का प्रदर्शन अपेक्षा के अनुरूप नहीं रहा, तथापि संतोषजनक बात यह रही कि 1900 के पेरिस ओलंपिक खेलों के बाद किसी भारतीय खिलाड़ी (मनु भाकर) ने एक संस्करण में दो पदक जीते, ओलंपिक खेलों में सफलता की गौरव गाथा लिखने वाले खेल 'हॉकी' में भारतीय खिलाड़ी 2020 के टोक्यो ओलंपिक खेलों में जीते गए कांस्य पदक पर कब्जा बरकरार रखने में सफल रहे और भारतीय एथलेटिक्स के 'ध्रुव तारा' नीरज चोपड़ा रजत पदक जीतने में कामयाब रहे। भारत ने 1896, 1904, 1908 एवं 1912 के ओलंपिक खेलों में भाग नहीं लिया। 1920, 1924, 1976, 1984, 1988 और 1992 के ओलंपिक खेलों में भारतीय खिलाड़ियों को कोई सफलता नहीं मिली। पेरिस में हुए 1900 के ओलंपिक खेलों में भारत की ओर से एक ब्रिटिश नागरिक नॉर्मन प्रिचार्ड ने प्रतिभागिता की और दो रजत पदक पाने में सफलता पाई। 1928 के एम्सटर्डम ओलंपिक खेलों से भारतीय हॉकी के स्वर्णिम युग की शुरुआत हुई जब भारतीय हॉकी टीम ने पहली बार ओलंपिक खेलों में भाग लेते हुए स्वर्ण पदक जीता। हॉकी टीम द्वारा स्वर्ण पदक जीतने का यह सिलसिला 1956 के मेलबर्न ओलंपिक खेलों तक जारी रहा और इस प्रकार लगातार छह स्वर्ण पदक जीते। उसके बाद के ओलंपिक खेलों में हॉकी टीम ने 1960 में रजत पदक, 1964 एवं 1980 में स्वर्ण पदक, तथा 1968, 1972, 2020 एवं 2024 के ओलंपिक खेलों में कांस्य पदक जीतने में सफलता पाई। इस प्रकार भारतीय हॉकी टीम ने ओलंपिक खेलों में 08 स्वर्ण, एक रजत एवं 04 कांस्य पदकों सहित कुल 13 पदक जीते हैं। व्यक्तिगत स्पर्धाओं में अभी तक भारत कुल 28 पदक जीत पाया है।

पेरिस ओलंपिक में भारत से दहाई अंकों में पदक जीतने की उम्मीद थी। हमारे पास 117 खिलाड़ी थे, जिनमें से कई दुनिया के टॉप एथलीट थे। टोक्यो ओलंपिक खेलों में भारत एक स्वर्ण, दो रजत और चार कांस्य पदक सहित कुल 07 पदक जीतकर पदक तालिका में 48वें स्थान पर रहा था। इसलिए ये उम्मीदें जायज थीं। दुनिया के बड़े खेल टूर्नामेंटों को स्टैटिस्टिकल डेटा उपलब्ध कराने वाली ओलंपिक एनालिस्ट कंपनी नीलसन ग्रेसनोट स्पोर्ट्स ने भी 24 जुलाई 2024 की अपनी एक रिपोर्ट में यह भविष्यवाणी की गई थी कि पेरिस ओलंपिक में भारत पदक तालिका में शीर्ष 30 में तो जगह नहीं बना पाएगा, लेकिन तीन स्वर्ण पदक और दो रजत सहित कुल 05 जीत सकता है। अगर ऐसा होता तो भारत पदक तालिका में 25वें दायदान पर होता, न कि बिना स्वर्ण पदक के 71वें पायदान पर। टोक्यो ओलंपिक खेलों के बाद से प्रमुख वैश्विक और महाद्वीपीय प्रतियोगिताओं के उपलब्ध परिणाम डेटा पर विचार करते हुए ग्रेसनोट ने 33वें ओलंपिक खेलों में भाग लेने वाले देशों और एथलीटों के लिए स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक की संख्या का अनुमान लगाया था। रिपोर्ट के अनुसार - 'भारतीय एथलीट एथलेटिक्स, मुक्केबाजी और निशानेबाजी में इतिहास रचते हुए स्वर्ण एवं रजत पदक जीत सकते हैं। लेकिन, हकीकत में परिणाम उतना अच्छा नहीं रहा, जितना सोचा गया था। सबसे बड़ी निराशा यह रही कि भारत पेरिस ओलंपिक में एक भी गोल्ड मेडल नहीं जीत पाया। इसे यूँ कहें कि भारत के संबंध में ग्रेसनोट के अनुमान सही साबित नहीं हो पाए या भारतीय खिलाड़ी 145 करोड़ देशवासियों की उम्मीदों का बोझ सहन नहीं कर सके और ग्रेसनोट के अनुमानों एवं करोड़ों भारतीयों की उम्मीदों पर खरे नहीं उतर सके। ग्रेसनोट की रिपोर्ट में कहा गया था - 'टोक्यो ओलंपिक खेल 2020 में नीरज चोपड़ा ने इतिहास रचते हुए भाला फेंक स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता था। इसके बाद नीरज ने लगातार अच्छा प्रदर्शन करते हुए विश्व चैंपियनशिप में स्वर्ण और डायमंड लीग में खिताब जीता। वह पेरिस में भारत को एक बार फिर स्वर्ण पदक दिला सकते हैं। महिला मुक्केबाज लवलीना बोरगोहेन (75 किग्रा) ने टोक्यो ओलंपिक में कांस्य पदक जीता था। दूसरी बार ओलंपिक में शिरकत करने जा रही लवलीना 2023 विश्व चैंपियनशिप में स्वर्ण और 2022 एशियाई खेलों में रजत पदक जीता। वह पेरिस ओलंपिक में कांस्य को स्वर्ण में बदलने की क्षमता रखती हैं। वहीं, 50 किग्रा वर्ग में दो बार की विश्व चैंपियन निखत जरीन भी स्वर्ण पदक जीतने की दावेदार हैं। पिछले दो ओलंपिक गेम्स में भारतीय निशानेबाज खाली हाथ लौटे, लेकिन पेरिस में किस्मत बदल सकती है। इन खेलों में भारत का निशानेबाजी में अब तक का सबसे बड़ा दल उतरा है। लगातार दूसरी बार ओलंपिक में उतर रही महिला निशानेबाज मनु भाकर से भारत को पदक की सबसे अधिक उम्मीद है। वहीं, पहली बार ओलंपिक में प्रतिनिधित्व कर रही सिफ्ट कौर सामरा लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रही हैं।'

2024 के पेरिस ओलंपिक खेलों में केवल 06 भारतीय खिलाड़ी/टीम, एथलेटिक्स (भाला फेंक) में नीरज चोपड़ा (रजत पदक); निशानेबाजी में मनु भाकर (कांस्य पदक - 10 मीटर एयर पिस्टल), मनु भाकर/सरबजोत सिंह (कांस्य पदक - 10 मीटर एयर पिस्टल मिश्रित टीम), स्वपनिल कुसाले (कांस्य पदक - स्कीट निशानेबाजी), कुशती में अमन सहरावत (कांस्य पदक - 57 किलो भारवर्ग) और हॉकी (पुरुष) टीम पदक जीतने में सफल रहे। मंजिल के पास पहुँचने पर भी इसे हासिल न कर पा सकने वाले अन्य खिलाड़ियों/टीम के नाम इस प्रकार हैं: लक्ष्य सेन (बैडमिंटन), अर्जुन बाबुता (10 मीटर पुरुष एयर राइफल, निशानेबाजी), मनु भाकर (महिला 25 मीटर पिस्टल, निशानेबाजी), मीराबाई चानू (भारोत्तोलन, 49 किलोग्राम भारवर्ग), महेश्वरी चौहान एवं अनंत जीत सिंह नरूका (मिक्स्ट स्कीट टीम, निशानेबाजी) और अंकिता भक्त एवं धीरज बोम्मदेवरा (तीरंदाजी मिश्रित टीम)। उपरोक्त खिलाड़ियों/टीमों का पेरिस ओलंपिक खेलों में प्रदर्शन निम्न प्रकार रहा:

नीरज चोपड़ा, भाला फेंक - रजत पदक: टोक्यो ओलंपिक खेल 2020 में इतिहास रचने के एक साल बाद ही नीरज चोपड़ा ने अमेरिका के ओरेगन में विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2022 में रजत पदक जीतकर एक और इतिहास रच दिया। नीरज चोपड़ा ने क्वालिफिकेशन में 88.39 मीटर के साथ ओरेगन 2022 के फाइनल में जगह बनाई और पदक राउंड में 88.13 मीटर का सर्वश्रेष्ठ श्रो करके रजत पदक हासिल किया। नीरज चोपड़ा विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप में

रजत पदक जीतने वाले इतिहास के पहले भारतीय बनने का खिताब हासिल किया। इसके साथ ही उन्होंने भारत के 19 साल के लंबे इंतजार को समाप्त कर दिया। यह विश्व चैंपियनशिप में भारत का दूसरा पदक है, इससे पहले अंजू बॉबी जॉर्ज ने लम्बी कूद (लॉन्ग जम्प) पेरिस 2003 में भारत को विश्व चैंपियनशिप में पहला पदक कांस्य के रूप में दिलाया था। नीरज पिछले काफी दिनों से कमर की चोट से परेशान थे। उन्होंने इस दौरान ओलंपिक से हटने के बारे में कभी नहीं सोचा। नीरज इंटरनेशनल लेवल पर जब से सुर्खियों में आए हैं, शायद एक दफा भी ऐसा नहीं रहा जब वह पदक के बगैर स्वदेश लौटे हों। पेरिस भी वह स्वर्ण पदक पाने के लक्ष्य के साथ आए थे। नीरज ने 89.45 मीटर के सत्र के सर्वश्रेष्ठ प्रयास के साथ क्वालीफिकेशन में शीर्ष स्थान प्राप्त करके भारत को एक और स्वर्ण की उम्मीद दी। नीरज जांघ की समस्या के बावजूद तैयार थे। पर पाकिस्तान के अरशद नदीम ने 92.97 मीटर का शानदार श्रो फेंककर सचमुच प्रतियोगिता खत्म कर दी। नीरज 89.34 मीटर से बेहतर श्रो नहीं कर पाए और उन्हें रजत पदक से संतोष करना पड़ा। नीरज से पूछा गया कि ओलंपिक में जीत के लिए सिर्फ स्किल्स काफी हैं या कुछ और चाहिए। नीरज ने कहा, 'मेरे हिसाब से माइंडसेट का रोल बड़ा होता है। मेरे साथ फिटनेस की भी समस्या थी। अरशद ने जब 93 मीटर के करीब श्रो कर दिया तो भी मैं नहीं सोच रहा था कि अब वहां तक नहीं पहुंच सकता। मेरी मानसिकता उस वक्त भी ऐसी थी कि मैं भी वहां तक श्रो कर सकता हूं।'

मनु भाकर, निशानेबाजी (10 मीटर एयर पिस्टल, एकल, महिला) - कांस्य पदक: युवा मनु भाकर की अगुआई में निशानेबाजों का प्रदर्शन भारत के लिए राहत भरा रहा क्योंकि छह में से तीन पदक निशानेबाजी से आए। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि 22 वर्षीय भाकर ने अपने अभूतपूर्व प्रदर्शन से भारत का मान बचाया। 26 जुलाई 2024 से शुरु हुए पेरिस ओलंपिक में भारत को पहला पदक 10 मीटर एयर पिस्टल (निशानेबाजी, एकल, महिला) में मनु भाकर ने कांस्य पदक जीतकर दिलाया। मनु भाकर ओलंपिक पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला निशानेबाज बनीं। मनु भाकर ने 30 जुलाई को सरबजोत सिंह के साथ 10 मीटर एयर पिस्टल मिश्रित युगल का कांस्य पदक भी जीता। इस प्रकार मनु भाकर ने एक ओलंपिक में दो पदक जीतने वाली पहली भारतीय बनकर इतिहास रच दिया। वह स्वतंत्रता के बाद पहली भारतीय खिलाड़ी हैं जिन्होंने एक ओलंपिक में दो पदक जीते। स्वतंत्रता से पहले ब्रिटिश मूल के भारतीय खिलाड़ी नॉर्मन प्रिचार्ड ने पेरिस ओलंपिक 1900 में भारत की ओर से भाग लेते हुए पुरुषों की 200 मीटर दौड़ और 200 मीटर बाधा दौड़ (हर्डल रेस) में दो रजत पदक जीते थे। जब एक पदक भी 'स्टारडम' की गारंटी देता है तो भाकर के दोहरे पदक ने उन्हें एक अलग ही श्रेणी में ला खड़ा किया है। पेरिस ओलंपिक 2024 में मनु भाकर के पास पदकों की हैटट्रिक लगाने का सुनहरा अवसर था परंतु दुर्भाग्यवश वह महिलाओं की 25 मीटर एयर पिस्टल फाइनल में 28 अंकों के साथ चौथे स्थान पर रहीं।

मनु भाकर और सरबजोत सिंह, निशानेबाजी (10 मीटर एयर पिस्टल, मिश्रित टीम) - कांस्य पदक: मनु भाकर के साथ पेरिस में 10 मीटर एयर पिस्टल मिश्रित टीम स्पर्धा में कांस्य पदक जीतने वाले सरबजोत सिंह ने अपने करियर में कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं - जर्मनी के म्यूनिख में आईएसएसएफ विश्व कप 2024 में पुरुषों की 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा में स्वर्ण पदक, 2022 एशियाई खेलों में अर्जुन सिंह चीमा और शिवा नरवाल के साथ मिलकर 10 मीटर एयर पिस्टल टीम स्पर्धा में चीन को हराते हुए स्वर्ण पदक और इससे पहले 2021 में विश्व चैंपियनशिप की व्यक्तिगत और टीम स्पर्धाओं में स्वर्ण पदक। हालांकि, पेरिस ओलंपिक में डेब्यू कर रहे सरबजोत का अभियान एक दुखद शुरुआत के साथ शुरू हुआ। वह पुरुषों की 10 मीटर एयर पिस्टल व्यक्तिगत फाइनल में मामूली अंतर से जगह बनाने से चूक गए। आठवें स्थान पर मौजूद जर्मन निशानेबाज रॉबिन वाल्टर के समान अंक हासिल करने के बावजूद सरबजोत इनर 10 में पीछे रह जाने की वजह से क्वालिफिकेशन राउंड में नौवें स्थान पर रहे थे। परंतु इसके चार दिन बाद ही जब एयर पिस्टल मिश्रित टीम स्पर्धा में ओलंपिक पोडियम पर जगह बनाने का एक और मौका आया, तो सरबजोत ने कोई गलती नहीं की। मनु भाकर के साथ सरबजोत ने कांस्य पदक मैच में रिपब्लिक ऑफ कोरिया के

ली वोन्हो और ओह ये-जिन को हराकर अपना पहला ओलंपिक पदक जीता। हमेशा से ही खिलाड़ियों का प्रोत्साहन करने वाली हरियाणा सरकार द्वारा सरबजोत को खेल विभाग में उप निदेशक के पद की पेशकश की गई थी, लेकिन उन्होंने इसके बजाय अपने निशानेबाजी करियर को प्राथमिकता देने का फैसला किया है। सरबजोत ने कहा, 'नौकरी अच्छी है, लेकिन मैं अभी इसे नहीं करूंगा। मैं पहले अपनी शूटिंग पर काम करना चाहता हूँ।' सरबजोत का सरकारी नौकरी ठुकराने का फैसला कुछ लोगों को हैरान कर सकता है, लेकिन यह उनके शूटिंग करियर पर उनके अटूट ध्यान और समर्पण को दर्शाता है। खेल के प्रति उनकी प्रतिबद्धता ने उन्हें पहले ही अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सफलता दिलाई है, और उनके इस फैसले से पता चलता है कि वे भविष्य में और भी ऊंचे लक्ष्य बना रहे हैं, और शायद एलए 2028 ओलंपिक (लॉस एंजलिस, अमेरिका) में स्वर्ण पदक जीतना चाहते हैं।

स्वप्निल कुसाले (स्कीट निशानेबाजी) - कांस्य पदक: पुणे में जन्मे भारतीय निशानेबाज स्वप्निल कुसाले ने पेरिस ओलंपिक में पुरुषों की 50 मीटर 3-पोजिशन स्पर्धा में भारत को ऐतिहासिक कांस्य पदक दिलाया। वह ओलंपिक में 50 मीटर राइफल 3 पोजिशन इवेंट में पदक जीतने वाले पहले भारतीय निशानेबाज हैं। राइफल श्री पोजिशन में निशानेबाज तीन पोजिशन में निशाना लगाता है। इनमें नीलिंग यानी घुटने के बल बैठकर, प्रोन यानी पेट के बल लेटकर और स्टैंडिंग यानी खड़े खड़े शॉट लगाया जाता है। वह इस स्पर्धा में भारत के लिए ओलंपिक पदक जीतने वाले पहले एथलीट हैं। वह क्वालिफिकेशन राउंड में सातवें स्थान पर रहे थे और फाइनल में भी नीलिंग और प्रोन राउंड के बाद स्वप्निल छठे स्थान पर चल रहे थे। स्टैंडिंग पोजिशन में उन्होंने जबरदस्त वापसी की और अपने पहले ही ओलंपिक में भारत को पदक दिलाया। स्वप्निल काहिरा में 2022 विश्व चैंपियनशिप में चौथे स्थान पर रहे थे, जिससे भारत के लिए ओलंपिक कोटा स्थान अर्जित किया था। स्वप्निल ने 2022 विश्व चैंपियनशिप में टीम स्पर्धा में कांस्य पदक, नई दिल्ली में 2021 विश्व कप में टीम स्पर्धा में स्वर्ण पदक, 2022 एशियाई खेलों में टीम स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता और बाकू में 2023 विश्व कप में मिश्रित टीम स्पर्धा में स्वर्ण पदक के साथ-साथ व्यक्तिगत और टीम स्पर्धाओं में दो रजत पदक जीते।

अमन सहरावत (कुश्ती - 57 किलो भारवर्ग) - कांस्य पदक: हरियाणा के झज्जर जिले के बीरोहार के रहने वाले अमन सहरावत पेरिस ओलंपिक 2024 में कुश्ती के 57 किलो भारवर्ग में प्यूर्टो रिको के डेरियन क्रूज को 13-5 से हराते हुए कांस्य पदक अपने नाम किया। पूरे मैच में उन्होंने दबदबा बनाकर रखा। हालांकि, अमन सहरावत के लिए यह सफर आसान नहीं रहा। सेमीफाइनल में उन्हें रियो ओलंपिक 2016 के रजत पदक विजेता और जापान के शीर्ष वरीयता प्राप्त पहलवान री हिगुची के खिलाफ कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ा था। इस मुकाबले में अमन को 0-10 से हार का सामना करना पड़ा, जिससे उनका स्वर्ण पदक का सपना टूट गया। लेकिन अमन ने हार से निराश होकर बैठने की बजाय, कांस्य पदक के लिए खुद को तैयार किया और पूरे जोश के साथ मैदान में उतरे। अमन ने क्वार्टरफाइनल में अल्बानिया के जेलिमखान अबकारोव के खिलाफ 12-0 से बड़ी जीत हासिल की थी और राउंड ऑफ 16 में भी अमन का प्रदर्शन काफी प्रभावशाली रहा। उन्होंने उत्तरी मैसेडोनिया के व्लादिमीर एगोरोव को 10-0 से हराया। अमन सहरावत ने 21 साल और 24 दिन की उम्र में कांस्य पदक जीता और इसके साथ ही अमन ग्रीष्मकालीन खेलों में भारत के सबसे कम उम्र के पदक विजेता बन गए हैं। इस प्रकार उन्होंने उन्होंने पीवी सिंधु के रिकॉर्ड को तोड़ दिया। सिंधु की उम्र रियो 2016 ओलंपिक में रजत पदक जीतते समय 21 साल, एक महीना और 14 दिन थीं।

पुरुष हॉकी टीम - कांस्य पदक: हॉकी में 41 साल के लंबे समय अंतराल के बाद टोक्यो ओलंपिक 2020 में कांस्य पदक जीतने वाली भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने ग्रीष्मकालीन खेलों में अपना लगातार दूसरा कांस्य पदक और कुल मिलाकर 13वां पदक हासिल किया। भारत आठ स्वर्ण, एक रजत और चार कांस्य पदक के साथ ओलंपिक इतिहास की सबसे सफल हॉकी टीम है। कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने पेरिस में भारत की अगुवाई की और 10 गोल किए, जबकि अपने करियर के आखिरी अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट में खेल रहे दिग्गज गोलकीपर पीआर श्रीजेश ने प्रभावशाली प्रदर्शन किया।

भारत को पेरिस 2024 ओलंपिक पुरुष हॉकी टूर्नामेंट के पूल बी में न्यूजीलैंड, आयरलैंड, मौजूदा ओलंपिक चैंपियन बेल्जियम, ऑस्ट्रेलिया और अर्जेंटीना के साथ रखा गया था। भारतीय टीम ने पेरिस में अपने अभियान की शुरुआत न्यूजीलैंड पर 3-2 की करीबी जीत दर्ज करके की। इसके बाद उसने अर्जेंटीना के खिलाफ ड्रॉ मैच खेला। फिर आयरलैंड के खिलाफ दमदार प्रदर्शन करके 2-0 से जीत दर्ज की। हालांकि, बेल्जियम के खिलाफ दमदार प्रदर्शन करने के बावजूद टीम 1-2 से मैच गंवा बैठी। भारतीय टीम ने फिर ऑस्ट्रेलिया को 52 साल बाद ओलंपिक्स में मात देकर इतिहास रचा। हरमनप्रीत ब्रिगेड ने ऑस्ट्रेलिया पर 3-2 से जीत दर्ज की। इस जीत के बाद भारतीय टीम का क्वार्टर फाइनल में मुकाबला ग्रेट ब्रिटेन से हुआ। पीआर श्रीजेश के शानदार प्रदर्शन के कारण भारतीय टीम ने शूटआउट में मैच जीता। सेमीफाइनल मुकाबले में भारत का सामना जर्मनी से हुआ। यहां भारत ने अच्छा खेल दिखाया, लेकिन अंतिम पलों में छोटी-सी चूक टीम को भारी पड़ गई और उसने 2-3 से मुकाबला गंवा दिया। इसके बाद भारत ने ब्रॉन्ज मेडल मैच में स्पेन को 3-2 से मात दी। भारत ने 52 साल बाद ओलंपिक्स में एक के बाद एक दो मेडल जीते।

अगर सरसरी तौर पर देखें तो पेरिस ओलंपिक भारत के लिए आसान नहीं रहा। लेकिन अगर गहराई से देखें तो कुछ उम्मीदें भी नजर आती हैं। भारत के निम्नलिखित छह खिलाड़ियों ने चौथा स्थान हासिल किया। यह अगर कांस्य में तब्दील हो जाते तो भारत के खाते में छह नहीं बल्कि एक दर्जन पदक होते। ओलंपिक में पदक चूकने का मलाल सबसे ज्यादा चौथे स्थान पर रहने वाले खिलाड़ी या टीम को होता है। आखिरी स्थान पर रहना सबसे ज्यादा निराशाजनक होता है लेकिन चौथे स्थान पर होना सबसे ज्यादा दर्द देता है। सकारात्मक सोच वाले नीरज चोपड़ा का कहना है कि 'छह चौथे स्थान आसानी से नहीं मिलते। इसका मतलब है कि हमारे खिलाड़ी लगभग-लगभग वहां तक पहुंच रहे हैं। अगर हम उनका समर्थन करते रहें तो हम इन चौथे स्थानों को पदकों में बदल सकते हैं।'

लक्ष्य सेन: बैडमिंटन खिलाड़ी लक्ष्य सेन भी मेडल से कदम दूर रह गए। लक्ष्य सेन ने ब्रॉन्ज मेडल मैच में पहला गेम जीत लिया था। फिर उनका खेल ट्रैक से उतर गया। वह मेडल से चूक गए। लक्ष्य सेन को कांस्य पदक मैच में मलेशिया के ली जी जिया के खिलाफ 21-13, 16-21, 11-21 से हार का सामना करना पड़ा। लक्ष्य सेन ने हर गेम में बढ़त बनाई थी, लेकिन इसके बाद भी वह हार गए। चैंपियन विक्टर एक्सेलसेन से जब लक्ष्य की कमियों के बारे में पूछा गया तो उनकी राय थी, 'वह काफी प्रतिभावान हैं। मगर उन्हें इस तरह के मैच को और डीप तक ले जाना होगा। समय के साथ वह सीखेंगे।'

अर्जुन बाबुता: एशियाई चौम्पियनशिप, कोरिया (2023) में 10 मीटर एयर राइफल व्यक्तिगत स्पर्धा में रजत पदक और देश के लिए ओलंपिक 2024 का कोटा स्थान हासिल करने वाले अर्जुन बाबुता ने फाइनल राउंड में शुरुआत में अच्छा प्रदर्शन किया, लेकिन वह बाद में अपनी लय बरकरार नहीं रख पाए। उन्होंने फाइनल की शुरुआत 10.7 से की और फिर 10.2 स्कोर किया। तीसरे शॉट पर 10.5 स्कोर के साथ वह चौथे स्थान पर पहुंच गए और फिर 10.4 के साथ तीसरे स्थान पर पहुंचे। पहली सीरिज उन्होंने 10.6 पर खत्म की। दूसरी सीरिज में उन्होंने 10.7, 10.5, 10.8 के पहले तीन शॉट लगाए। इस समय वह विश्व रिकार्डधारी चीन के शेंग लिहाओ से 0.1 अंक ही पीछे थे। लिहाओ ने 252.2 के ओलंपिक रिकॉर्ड के साथ स्वर्ण पदक जीता। स्वीडन के विक्टर लिंग्रेन को रजत और क्रोएशिया के मारिसिच को कांस्य पदक मिला। अर्जुन बाबुता को क्रोएशिया के मिरान मारिसिच के 10.7 के जवाब में उनका 9.5 का शॉट भारी पड़ गया और वह पदक की रेस से बाहर हो गए। अर्जुन 208.4 अंकों के साथ चौथे नंबर पर रहे।

मनु भाकर: 10 मीटर महिला एयर पिस्टल स्पर्धा में व्यक्तिगत एवं मिश्रित टीम स्पर्धा में भी कांस्य पद अपने नाम करने वाली मनु भाकर 25 मीटर पिस्टल स्पर्धा के फाइनल मुकाबले में एक समय पदक जीतने की स्थिति में थीं। सात सीरीज की समाप्ति के बाद मनु भाकर दूसरे नंबर पर कायम थीं। उस समय रेस में सिर्फ चार शूटर बची थीं। इसके बाद फिर आठवीं सीरीज हुई, जिसकी समाप्ति के बाद एक शूटर को एलिमिनेट होना था। आठवीं सीरीज में मनु के पांच

में से सिर्फ 2 शॉट निशाने पर रहे, ऐसे में मनु और हंगरी की वेरोनिका मेजर के एक समान 28-28 अंक हो गए। ओलंपिक की किसी निशानेबाजी स्पर्धा के फाइनल में यदि एलिमिनेशन स्टेज में दो शूटर्स के समान अंक होते हैं, तो शूटऑफ का सहारा लिया जाता है। शूटऑफ में हंगरी की शूटर ने 5 में से 3 शॉट सही लगाए, वहीं मनु भाकर 5 में से दो शॉट निशाने पर लगा सकीं और इस तरह मनु अपने तीसरे पदक से चूक गईं एवं चौथे नंबर पर रहीं।

मीराबाई चानू: ओलंपिक पदक विजेता, विश्व चैंपियन और विश्व रिकॉर्ड धारक मीराबाई चानू पिछले कुछ समय से विश्व स्तर पर भारतीय भारोत्तोलन का चेहरा रहीं हैं। टोक्यो ओलंपिक खेलों के पहले ही दिन (24 जुलाई 2021 का) भारोत्तोलन के 49 किलोग्राम भारवर्ग में कुल भार - 202 किलोग्राम (87 स्नैच प्लस 115 क्लीन एंड जर्क) उठाकर भारत को रजत पदक दिलाने वाली मीराबाई चानू पेरिस ओलंपिक में चौथे नंबर पर रहते हुए बाहर हुईं। मीराबाई चानू ने स्नैच में 88 और क्लीन एवं जर्क में 111 से कुल 199 किग्रा का वजन उठाया और इस प्रकार वह महज एक किलोग्राम से पदक से चूक गईं। थाईलैंड की सुरोदचना खाम्बो 200 (88 और 112) किग्रा के वजन से कांस्य पदक जीतने में सफल रही।

महेश्वरी चौहान और अनंतजीत सिंह नरूका: स्कीट मिश्रित टीम स्पर्धा के कांस्य पदक मुकाबले में महेश्वरी चौहान और अनंतजीत सिंह नरूका को भी हार का सामना करना पड़ा। भारतीय जोड़ी को इस मैच में पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के जियांग यिटिंग और ल्यू जियानलिन के खिलाफ केवल एक अंक (43-44) से हार का सामना करना पड़ा था। भारत ने इस मैच में चीन को कड़ी टक्कर दी थी। पहली सीरीज में महेश्वरी ने सभी चार निशाने लगाए, लेकिन अनंत एक में चूक गए। दूसरी सीरीज में महेश्वरी और अनंत एक-एक निशाना चूक गए। चीन ने पहली सीरीज में सभी निशाने लगाए, लेकिन दूसरी सीरीज में यिटिंग के तीन निशाने नहीं लगे। तीसरी सीरीज में अनंत सभी चार प्रयासों में सफल रहे, लेकिन महेश्वरी एक बार असफल रहीं। चीन की टीम भी इस सीरीज में एक निशाना चूक गई। चौथी सीरीज में चीन ने सभी निशाने सटीक लगाए। भारत के लिए अनंत ने तो सभी निशाने लगाए लेकिन महेश्वरी एक बार असफल रहीं। पांचवीं और छठी सीरीज में चीन और भारत दोनों ने ही अपने सभी निशाने सही लगाए लेकिन टीम इंडिया एक अंक से पीछे रह गई।

धीरज बोम्मादेवरा और अंकिता भक्त: भारत की तीरंदाजी जोड़ी धीरज बोम्मादेवरा और अंकिता भक्त भी मेडल जीतने से सिर्फ एक कदम दूर रही। मिश्रित टीम स्पर्धा के कांस्य पदक मैच में अमेरिका की कैसी कॉफहोल्ड और ब्रैडी एलिसन की जोड़ी ने भारतीय जोड़ी को 37-38, 35-37, 38-34, 35-37 (6-2) से हराया, जिसके चलते पेरिस ओलंपिक में इनका अभियान भी चौथे नंबर पर खत्म हुआ। इस प्रकार, धीरज बोम्मादेवरा और अंकिता भक्त खेलों के पारंपरिक खेलों में से एक में भारत के ओलंपिक पदक के लंबे इंतजार को खत्म करने का सुनहरा मौका गंवा दिया। अंकिता और धीरज बोम्मादेवरा ने भारत के लिए पहली बार ओलंपिक में तीरंदाजी के सेमीफाइनल में जगह बनाकर इतिहास रच दिया था। हालांकि, अंतिम चार चरण में भारतीय टीम को दक्षिण कोरियाई टीम से हार का सामना करना पड़ा और कांस्य पदक मैच में भी उन्हें अमेरिका के खिलाफ कड़ी चुनौती का सामना करना था क्योंकि ब्रैडी एलिसन पेरिस ओलंपिक से पहले तीन बार के ओलंपिक पदक विजेता थे और कैसी कॉफहोल्ड महिला व्यक्तिगत रिकर्व रैंकिंग में नंबर एक हैं।

भारत के 117 सदस्यीय दल में महज छह पदक आना आदर्श नहीं हैं, लेकिन भारत के लिए इस दौरान खुशी, उम्मीद, निराशा और दुख के पल भी आए। विनेश फोगाट वाले मामले ने इस तकलीफ को और बढ़ा दिया। 50 किलोग्राम भारवर्ग के सेमीफाइनल में क्यूबा की प्रतिद्विंद्वी पहलवान युस्नेलिस गुजमैन लोपेज को एकतरफा अंदाज में 5-0 से हराते हुए 29 साल की विनेश फोगाट ओलंपिक कुश्ती के फाइनल में पहुंचने वाली पहली भारतीय महिला बनी थीं और उनके पास ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली महिला पहलवान बनने का सुनहरा मौका था। विनेश फोगाट ने इससे

पहले ओलंपिक खेलों में बड़ा उलटफेर करते हुए पहले ही राउंड में अब तक अपराजेय मौजूदा चौम्पियन युई सुसाकी को शिकस्त देने के बाद क्वार्टर फाइनल में यूक्रेन की ओक्साना लिवाच को हराकर सेमीफाइनल में जगह बनाई थी। लेकिन आखिरी मैच से पहले जब उनका वजन हुआ तो वह 100 ग्राम अधिक निकला। इसलिए उन्हें मैच की खातिर अयोग्य घोषित कर दिया गया और उनका स्वर्ण पदक जीतने का ख्वाब टूट गया। उनके फाइनल में पहुंचने पर हर कोई खुशी में झूम रहा था, लेकिन इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना ने हर किसी को हैरान कर दिया।

पेरिस ओलंपिक खेलों में भारतीय खिलाड़ियों द्वारा छह चौथे स्थान हासिल करने से जहाँ भविष्य में बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद जगती है, वहीं दूसरी ओर जब हम टोक्यो ओलंपिक खेलों में पदक जीतने और चौथे स्थान पर रहने वाले खिलाड़ियों/टीमों के टोक्यो ओलंपिक खेलों के बाद के प्रदर्शन को देखते हैं तो उम्मीद के धागे टूटने लगते हैं। इसका प्रमुख कारण खिलाड़ियों के प्रदर्शन में निरंतरता की कमी है। ओलंपिक की बात करें तो टारगेट ओलंपिक पोलियम योजना भारत सरकार और खेल मंत्रालय की एक प्रमुख पहल है, जिसका उद्देश्य भारत के शीर्ष एथलीटों को सहायता प्रदान करना है। इस योजना का मकसद इन एथलीटों के प्रशिक्षण को बढ़ाना है ताकि वे ओलंपिक में पदक जीत सकें। इसे हासिल करने के लिए, खेल विभाग ओलंपिक पदक जीतने की क्षमता वाले व्यक्तियों की पहचान करता है। यह योजना उन एथलीटों को स्पॉन्सर करती है, जिनमें अगले ओलंपिक खेलों में जीतने की प्रबल क्षमता दिखती है। खेल के इस महाकुंभ के लिए खिलाड़ियों ने सालों पहले से तैयारी शुरू कर दी थी। अलग-अलग खेलों में एथलीट ने विश्व स्तर पर दमदार प्रदर्शन कर ओलंपिक के लिए क्वालीफाई किया था, लेकिन इसके बावजूद भारत के खाते में टोक्यो ओलंपिक से एक पदक कम आया। ओलंपिक में इस निराशाजनक प्रदर्शन के बाद कई तरह की बातें सामने आ रही हैं। कई खिलाड़ियों का यह कहना है कि उन्हें सरकार के तरफ उस तरह की मदद नहीं मिली जैसी मिलनी चाहिए थी। यही कारण है कि उनकी तैयारी ओलंपिक के लेवल की नहीं हो पाई है और इसी वजह वह मेडल नहीं ला पाए। जबकि टाइम्स ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार, पेरिस ओलंपिक के लिए दल तैयार करने के लिए केंद्र सरकार ने पिछले तीन सालों में 470 करोड़ रुपए खर्च किए हैं। यह पहले के आंकड़ों से काफी ज्यादा है।

बीजिंग ओलंपिक 2008 में स्वर्ण पदक जीतने वाले अभिनव बिंद्रा ने कहा कि पैसा ही मेडल नहीं ला सकता है। साथ ही उन्होंने कहा कि हालांकि एथलीटों पर पैसा खर्च करना बंद नहीं कर सकते, लेकिन हमें समझना होगा कि कहाँ और किस तरह से पैसा खर्च करना है। बेहतरीन सुविधाएं ही पदक की गारंटी नहीं दे सकती हैं। खिलाड़ियों को मानसिक रूप से तैयार करने के साथ-साथ उन्हें उच्च कोटि के सपोर्ट स्टाफ जैसे फिजियोथेरेपिस्ट और फिजिकल ट्रेनर्स उपलब्ध कराये जाने चाहिए। हमें समग्र रूप से आत्मनिरीक्षण करने और आगे चलकर खिलाड़ियों की संख्या बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करने की जरूरत है। 2028 लॉस एंजलिस ओलंपिक में खिलाड़ियों की संख्या तिगुनी करने का प्रयास करना चाहिए। पेरिस में अमेरिका के 600 से अधिक खिलाड़ी थे, जबकि जापान के 400 से अधिक। भारत ने केवल 117 खिलाड़ी भेजे थे। अगर भारत इस संख्या को तीन गुना बढ़ाने में सक्षम होता है तो स्वाभाविक है कि पदकों की संख्या भी बढ़ेगी क्योंकि संभाव्यता के नियम के अनुसार भी अधिक खिलाड़ियों के भाग लेने से अधिक पदक जीतने की संभावना बढ़ जाती है।

बीरेन्द्र सिंह रावत
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
वी वी गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान





नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति(कार्यालय) नोएडा की 47वीं बैठक दिनांक 23.08.2024 को राष्ट्रीय होटल प्रबंधन एवं कैटरिंग टेक्नोलॉजी परिषद, सेक्टर-62, नोएडा के सौजन्य से आयोजित की गई।



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति(कार्यालय) नोएडा की 47वीं बैठक के दौरान राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए सदस्य कार्यालयों को राजभाषा शील्ड प्रदान किए गए।

भारतीय संस्कृति की प्रासंगिकता

जीवन जीने की विधि को संस्कृति कहते हैं कोई भी मानव समाज बिना संस्कृति के नहीं रह सकता है। भारतीय संस्कृति को दुनिया की श्रेष्ठ संस्कृति में से एक रखा जा सकता है यहाँ कुछ भारतीय संस्कृति के बिन्दु विचार इस प्रकार हैं।

हमारी संस्कृति हमें पेड़ पौधे और जल को संरक्षित करने की सीख देती है। ये पेड़ पौधे हमारे जीवन के लिए कितना महत्वपूर्ण हैं ये हमसे बेहतर कौन समझ सकता है। बिना पेड़ पौधे और जल के किसी भी सभ्यता और संस्कृति का निर्माण संभव नहीं है। जब भी हम किसी भी संस्कृति की बात करते हैं या अपने इतिहास के पन्नों को पलट के देखते हैं तो यह पाते हैं कि जिस भी संस्कृति और सभ्यता का उदगम हुआ है वह किसी नदी के किनारे या जंगलों के बीच ही हुआ है ये संस्कृति और सभ्यता किस तरह मनुष्य को प्रकृति से जोड़ती हैं और जीवन जीना सिखाती हैं यह हम और आप बहुत बखूबी से जानते हैं। मनुष्य और प्रकृति का संबंध कितना गहरा है ये हम इस श्लोक से समझ पाते हैं:-

“शाश्वतम्, प्रकृति-मानव-सङ्गतम्, सङ्गतं खलु शाश्वतम् ।
तत्त्व-सर्वं धारकं सत्त्व-पालन-कारकं ॥
वारि-वायु-व्योम-वह्नि-ज्या-गतम् ।
शाश्वतम्, प्रकृति-मानव-सङ्गतम् ॥”

हमारी संस्कृति हमेशा से पूजनीय थी और है, और अब तो वैज्ञानिक भी इस बात को सिद्ध कर चुके हैं जो चीज वैज्ञानिक अब खोज रहे हैं वो हमारी संस्कृति में कई सालों से चली आ रही है। लेकिन अब के समय में हमारी संस्कृति विलुप्त होती जा रही है हर साल लगभग 30 खरब पेड़ काट रहे हैं और उनको काट कर मानव जीवन बसाया जा रहा है जबकि ये नहीं जानते कि मानव जीवन के लिए हवा पानी कितना जरूरी और महत्वपूर्ण है पेड़ों के काटने से प्रकृति संतुलन बिगड़ता जा रहा है जिसके चलते हमारे समक्ष जलवायु परिवर्तन जैसी समस्या उत्पन्न हो रही है और आए दिन हमें किसी न किसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

हमारी संस्कृति में किस तरह बड़ों का सम्मान किया जाता है किस तरह हम अपने बुजुर्गों से आशीर्वाद लेकर अपने किसी भी कार्य को आरंभ करते हैं जहाँ हमें उनसे आशीर्वाद तो मिलता ही है उसके साथ साथ उनका अनुभव भी, जो हमें आगे बढ़ने में मदद करता है और हमें सही रास्ता दिखाता है जिसके मार्गदर्शन में हम हर कठिनाई से लड़ जाते हैं और अपने कार्य में सफल होते हैं जैसा कि हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है:

“अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः। चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलमा॥”

जिसका अर्थ है:- अभिवादनशील और नित्य वृद्धों की सेवा करने वाले व्यक्ति की आयु, विद्या, यश और बल में वृद्धि होती है।

लेकिन अब बड़ों के सम्मान करने की बजाए वृद्धाश्रम खुल रहे हैं जिनकी संख्या सरकारी और निजी मिला कर कुल 551 हो चुकी है जबकि लगभग 1911 से पहले हमारे देश में एक भी वृद्धाश्रम नहीं था। आज कल लोग उनका आशीर्वाद या अनुभव लेने की बजाय उनको वृद्धाश्रम भेजना ज्यादा ठीक समझते हैं जिनके घर में बड़े बुजुर्ग रह भी गए हैं उनसे भी लोग बच के रहना चाहते हैं जिसके फलस्वरूप आज वो अपने ही घर में अकेले हो गए हैं।

हमारी संस्कृति में एक जुट होकर रहने की भी पद्धति रही है जिसमें सपरिवार सभी एक जगह रहते, खाते- पीते, पढ़ते और प्रेमभाव से रहते हैं इसके साथ- साथ एक दूसरे के कामों में हाथ बँटाते हैं अगर परिवार में किसी को दुख होता

है तो कैसे हम उसको बाँट के आधा कर देते है और कोई सुख हो तो उसको बाँट के दस गुना बढ़ा देते है। हमारे देश की संस्कृति हमेशा से सबको एक परिवार की तरह मानती है जिसके लिए “वसुधैव कुटुम्बकम्” का नारा दिया गया है, जिसका शाब्दिक अर्थ सारी पृथ्वी ही हमारा कुटुंब है।

लेकिन आज कल के लोग एकल परिवार मे रहना ज्यादा पसंद करते है जिसके चलते वो अवसाद से घिरते जा रहे है और अकेले होते जा रहे है जिसकी वजह से उनके मानसिक और स्वास्थ्य जीवन पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है जिसके फलस्वरूप वे कभी कभी बच्चों या अपनों के साथ दुर्व्यहार भी कर बैठते है।

यह सभी हमारी संस्कृति का हिस्सा कभी नहीं थे लेकिन आगे बढ़ने की दौड़ के चक्कर में अपनी सभ्यता और संस्कृति को भूल कर आज कल पश्चिमी संस्कृति पर लोग ज्यादा भरोसा करते है और उनको अपनाते में अपने आपको समझते है और हमारी संस्कृति को पिछड़ा कहकर दुत्कारते है। और इसका अधिकतर प्रभाव हमारे देश के उत्तरी भाग मे अधिक दिखता है जबकि वही दक्षिणी भाग मे वो कैसे संस्कृति को बचाए रखे है और हमसे कहीं अधिक हर क्षेत्र में आगे है। हमे उनसे भी कुछ सीखना चाहिए। और पश्चिमी देशों की बात करें तो वो भी अब हमारी संस्कृति का अनुसरण कर रहे हैवे भी वही सब कर रहे है जो हमारी संस्कृति मे पहले से व्याप्त और विद्वमान है।

लेकिन अब हमे अपनी संस्कृति को बचाने के लिए या कहे कि पुनर्जीवित करने के लिए एक जुट होकर चलना पड़ेगा क्योंकि हमारी संस्कृति ही एक सुंदर और स्वास्थ्य जीवन का आधार है। जिसकी डोर पकड़ हम इस समाज का पुनर्गठन कर इस दुनिया में आगे बढ़ पाएंगे। ऐसा नहीं है कि उनकी संस्कृति मे जो अच्छा है उनसे ना सीखे, लेकिन हमे अपनी संस्कृति को भी बचाए रखना है क्योंकि यही हमारे देश और दुनिया के भविष्य को बचा सकती है और हमारे आने वाले कल को सुदृढ़ कर सकती है।

आयुषी त्रिपाठी
राष्ट्रीय होटल प्रबंध संस्थान



नोएडा की प्रगति की ओर बढ़ते कदम

दिल्ली की छाया में, यमुना के किनारे,
एक नया सपना जगा, नोएडा नाम से प्यारे ।
हर सुबह की पहली किरण के संग,
यह शहर बढ़ता है, लिए एक नयी उमंग ।
पगडंडियों से राजमार्गों तक की ये गाथा,
प्रगति की ओर हर कदम बढ़ता ही जाता ।
यहाँ हर इमारत कहती है एक कहानी,
सपनों को साकार करने की नयी जुबानी ।
हर हाथ में बसी है मेहनत की छाप,
नोएडा में बसते हैं साहस और धैर्य के आप ।
शिक्षा, तकनीक, और उद्योग का संगम,
हर दिल में है साहस, हर हाथ में दम।
अंतर्राष्ट्रीय कंपनियाँ यहाँ का है गहना,
प्रगति की राह पर, हर कदम है कहना।
कभी ना रुकना, यही तो यहां की रीत है,
हर मुश्किल के आगे झुकना नहीं, ये ही जीत है ।
हर चेहरे पर लिखा है कुछ कर गुजरने का इरादा,
नोएडा के कण-कण में बसा बस यही वादा ।
नोएडा की प्रगति यूँ ही न थमेगी,
हर कदम में आगे बढ़ने की कसम है जमेगी।

डॉ. अश्विनी कुमार दुबे,
वैज्ञानिक ग्रेड III, राष्ट्रीय जैविक संस्थान
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय



मेरे पापा

सबसे अच्छे, सबसे प्यारे थे, मेरे पापा।
मेरी पहचान, मेरा अभिमान थे, मेरे पापा।
मेरे मार्गदर्शक, मेरे पथप्रदर्शक थे, मेरे पापा।
दो मिनट भी नहीं लगते की क्या किया आपने,
लेकिन हर चीज को किनारे रखकर,
हर समय हाजिर रहने वाले थे, मेरे पापा।
खुद को भूलकर, हमे अपने सपने साकार,
करने का हौसला देने वाले थे, मेरे पापा।
जब निराशा हाथ लगे, हर बार आगे बढ़ने के लिए,
प्रेरित करने वाले थे, मेरे पापा।
अभी तक जो भी हासिल किया, जैसा भी किया,
उन सब के हकदार है, मेरे पापा।
थके हारे, घर पहुंचकर जिसकी मुस्कान देखकर चैन मिले,
वो थे, मेरे पापा।
दुःख या परेशानी को पलभर में समझने वाले थे, मेरे पापा।
कैसे कहूँ, क्या कहूँ, हर बात में याद आती है,
सबसे प्यारे, सबसे न्यारे, हमारा सबसे बड़ा सहारा थे, मेरे पापा।

दिव्या कुशवाहा
(पुस्तकालयाध्यक्ष एवं सूचना सहायक)
राष्ट्रीय परिषद् होटल प्रबंध और कैटरिंग टेक्नोलॉजी



माँ नादानियाँ तेरी

माँ को देखा माँ को सोचा,
माँ को संसार समझ लिया,
माँ की खुशियां तो समझते थे,
अब माँ का गम भी समझ लिया,
रोटी के टुकड़े करने में माँ,
करती थी तू बेईमानियां,
समझदार तो बहुत है तू पर,
प्यारी तेरी नादानियाँ, प्यारी तेरी
नादानियाँ।

तूने सिखाया पापा से डरना,
पर दूरी कभी बनाना मत,
एक बार को झुंझलाना मुझ पर तुम,
पर उनको गलत ठहराना मत,
उनके नक्शे कदमो पे चलना,
उनसे जुबान लड़ाना मत,
बचपन से ये सब कह कर,
उनका मोल बढ़ा दिया,
समझदार तो बहुत है तू पर,
प्यारी तेरी नादानियाँ, प्यारी तेरी
नादानियाँ।

अपने बच्चो के जितना ही तूने,
सबके बच्चो को प्यार दिया,
चाचा के हो या हो मामा के,
सबको कितना लाड किया,
सबकी इतनी परवाह माँ तू
कर कैसे अब लेती है,
प्यार मिलता है पर बुरा भला भी,
सह कैसे तू लेती है,
भूल जाती है हर मुश्किल दिन,
जैसे सुनी कहानियां,
माँ भोली भी बहुत है तू पर,
प्यारी तेरी नादानियाँ, प्यारी तेरी
नादानियाँ।

बड़ा हो गया आज भी माँ तू,
पास बुला बैठाती है,
निहारती है जैसे कल ही का आया,
फिर माथे पे सहलाती है,
बहुत पढ़ा है माँ सीता को,
माँ दुर्गा को देखा है,
तू सरिता सी निर्मल चंचल,
संस्कार तुझसे सीखा है,
नही जानता सबकी माँ,
क्या क्या pati khoti हैं,
ना ही मैं जानता भगवान को,
पर माँ ऐसी ही होती है,
प्यारी मेरी अच्छाई लगे तुझे,
प्यारी मेरी शैतानियां,
माँ मजबूत भी बहुत है तू पर,
प्यारी तेरी नादानियां, प्यारी तेरी
नादानियाँ।

न जाने बेटा कैसा हूँ,
पर माँ तू बहुत निराली है,
माँ तू खुश हो तो दिन होली,
और हर रात दिवाली है,
माँ पापा से कहना की हाँ,
उनको ज्यादा पूजता हूँ,
पर जब भी बुखार चढ़ता है माँ,
तुम्हारी ही गोदी ढूँढता हूँ,
पापा से कभी कह नहीं पाता,
तुमसे बहुत जताता हूँ,
कितना प्यार तुम्हे करता हूँ,
ये आज मैं फिर से बताता हूँ,
नहीं पढ़ी है गीता भी और नहीं पढ़ी

गुरबानियां,
माँ तुझमे ही गीता है और तुझमे ही
गुरबानियां,
माँ तू समझदार बहुत है लेकिन,
प्यारी तेरी नादानियां, प्यारी तेरी
नादानियाँ।

विपुल कुमार श्रीवास्तव
सामाजिक सुरक्षा सहायक
कर्मचारी भविष्य निधि संगठन क्षेत्रीय कार्यालय, नोएडा



नारी एक संघर्ष

नारी तेरी अजब कहानी
नारी तू चण्डी, नारी तू शक्ति
नारी तू लक्ष्मी, नारी तू नारायणी
पर एक सवाल है मन में, आशंकित हूँ कुछ कहने में क्यों तूझे
पिजड़े में रखी हुई चिड़िया सी बाधा है,
गिरती उठती हर संघर्ष से खोकर पहचान अपनी तू
अपनों में मिल जाती है, कुछ ऐसी ही तेरी गाथा है।
जब शांत हो तो सौंदर्य सी,
जब प्रचंड हो तो प्रलय सी
तू संगिनी भी, तू ही है अर्धांगिनी
घर के जलते चिराग सी तू।
फिर क्यों जीवन को निर्भय होकर जीने का अधिकार नहीं तुझे,
क्यों हर बार सीता सी दे अग्नि परीक्षा तू,
जुनुन है तुझको भी आगे बढ़ने का,
संघर्ष की राह में कुछ करके दिखलाने का।
मौन हैं, पर निशब्द नहीं
आवाज है, पर बोलती नहीं
आईना है, पर बिखरती नहीं
दर्द से भरी हैं, पर जीना छोडती नहीं
नारी तेरी अजब कहानी
नारी तेरी यही है कहानी।

पूजा
लिपिक
राष्ट्रीय होटल प्रबंध संस्थान



समय का विज्ञान

केरल का एक छोटा सा कस्बा जहां एक सरकारी स्कूल मे आज काफी चहल पहल थी। जिले में बोर्ड की परीक्षा होने वाले थी इसलिए दसवीं कक्षा वाले सारे बच्चे अपने पढ़ने वाले सेंटर ढूंढ रहे थे। इन्ही बच्चों की भीड़ मे दो दोस्त जोसेफ परेरा एवं डेविड मोरे काफी खुश नजर आ रहे थे। दोनों की दोस्ती बचपन से ही थी इसलिए दोनों ज्यादातर समय साथ ही बिताते थे। एक पढ़ाई-लिखाई मे काफी होशियार था और दूसरा बहुत ज्यादा कमजोर।

पर किसी को पता नहीं डेविड मोरे कब अपनी पढ़ाई पूरी कर लेता था और अच्छे नंबर ले आता था। जोसेफ परेरा को पढ़ाई लिखाई मे बचपन से ही कोई खाश रुचि नहीं थी। दोनों काफी खुश इसलिए नजर आ रहे थे क्योंकि उन दोनों के परीक्षा केंद्र एक ही स्कूल में पड़े थे। परीक्षा शुरू होने मे अभी एक महीना बाकी था पर सारे बच्चों मे जोश इतना था मानो पेपर कल से ही शुरू होने वाला हो। दिन बीतते गए और आखिर वो दिन आ गया जब सारे बच्चों को अपने जीवन का सबसे पहला सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन देने का मौका मिल गया हो। सभी बच्चे अपने रोल नंबर के हिसाब से अपने अपने परीक्षा कक्ष मे चले गए। परीक्षा समाप्त होने पर सारे बच्चे खुशी-खुशी बाहर निकाल रहे थे सिवाय जोसेफ को छोड़कर जो थोड़ा निराश दिख रहा था। ये कोई नई बात नहीं थी ऐसा अक्सर होता रहता था। जोसेफ के दुख का कारण एक महीने बाद आने वाले रिजल्ट का था। आखिर वो दिन भी आ गया जिसका सारे बच्चों को बेसब्री से इंतजार था। सभी बच्चों की आंखे सूचना पटल पर टिकी थी। स्कूल के बड़े बाबू अभी थोड़ी देर मे रिजल्ट की कॉपी सूचना पटल पर लगाने वाले थे। तभी अंदर से बड़े बाबू रिजल्ट की कॉपी लाकर एक छात्र को लगाने के लिए कहकर चले जाते हैं। सारे बच्चे एक दूसरे का मुँह देखते हैं और फिर अपना-अपना रिजल्ट देखने के लिए टूट पड़ते हैं। पहले वो अपना रिजल्ट देखते हैं फिर अपने सबसे करीबी दोस्तो का रिजल्ट देखते हैं। अपना रिजल्ट तो वे दूसरों का रिजल्ट देखते-देखते भूल जाते हैं पर अपने दोस्तो का रिजल्ट उनको जरूर याद रह जाता है।

आज दोनों दोस्तों को दसवीं पास किए बीस साल हो गए हैं। दोनों अपनी-अपनी जगह कमा खा रहे हैं। एक दिन अचानक दोनों की मुलाकात बहुत ही अजीब परिस्थिति में होती है। उनमें से एक सत्तर साल का बूढ़ा बन गया है और दूसरा पैंतीस साल का जवान बना हुआ है। दोनों आपस मे बातें करने लगे, डेविड मोरे ने बताया की वह बारहवीं करने के बाद इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने आई.आई.टी. मुंबई चला गया था। वहाँ से एरोनॉटिक्स विज्ञान मे एम.टेक. करने के बाद वह नासा से जुड़ गया था। तभी बीच में बात को काटते हुए परेरा ने पूछा वो सब तो ठीक है पर ये बताओ जब हमने दसवीं पास की थी तो हमारी उम्र बराबर ही थी। ऐसा नासा मे तुमने क्या कर दिया की इन बीते हुये बीस सालों मे तुम जवान ही रह गए और मैं सत्तर साल का बूढ़ा हो गया हूँ। डेविड मोरे कुछ देर शांत रहा फिर बोला दसवीं के बाद तुमने क्या शुरू किया था? तभी परेरा ने जबाब दिया मैंने अपनी पढ़ाई दसवीं के बाद बंद कर दी थी और अपने खेत में खेती कर अपना और परिवार का पालन-पोषण करने लगा। चलो अब तुम बताओ हमारी उम्र में इतना ज्यादा अंतर कैसे आया। थोड़ी सांस लाते हुए डेविड ने बताया की जब वो नासा में था तब उसे अंतरिक्ष में जाने का मौका मिला था, जो उसने बिना सोचे समझे स्वीकार कर लिया था। परेरा ने तब झट से बोला तो इससे क्या हुआ वहाँ लोग जाकर बूढ़े नहीं होते में क्या ?

डेविड ने अंततः बोला, अब मैं तुम्हें विज्ञान की बात बताता हूँ - ये सब समय फैलाव के कारण संभव हो पाया है। समय फैलाव दो घड़ियों द्वारा मापा गया। बीते समय में अंतर आया, ऐसा या तो उनके बीच सापेक्ष वेग के कारण था या उनके स्थानों के बीच गुरुत्वाकर्षण क्षमता में अंतर के कारण हो सकता है। मैं तुम्हें बहुत ही साधारण भाषा में समझाता हूँ, जब आप पृथ्वी के गुरुत्वीय बल को पार कर अंतरिक्ष में प्रवेश करते हैं तो आप अलग समय ज़ोन मे आ जाते हों। अंतरिक्ष में समय की रफ्तार बहुत धीमी हो जाती है। अंतरिक्ष में रहने वाले अंतरिक्ष यात्री हर आधे घंटे में पृथ्वी

पर रहने वाले लोगों की तुलना में 0.007 सेकंड धीमे रहते हैं। आइंस्टीन को धन्यवाद, हम जानते हैं कि आप जितनी तेजी से चलते हैं, समय उतना ही धीमी गति से गुजरता है - इसलिए बहुत तेज अंतरिक्ष यान भविष्य के लिए एक टाइम मशीन है। 99 प्रतिशत प्रकाश की गति से यात्रा करने वाले जहाज पर पांच साल पृथ्वी पर लगभग 36 साल के बराबर होते हैं। अब तुम्हें कुछ-कुछ समझ में आ गया होगा की ऐसा क्यों हुआ।

राजीव कुमार
कनिष्ठ वैज्ञानिक
राष्ट्रीय जैविक संस्थान



संतुलन

हम पशु होते तो जीवन सरल होता,
प्रकृति अपने हिसाब से सब करवाती,
हम देव होते तो भी जीवन सरल होता,
प्रकृति के नियमों से मुक्त हो चुके होते,
दिव्यकत यह है कि हम तो बीच में है कहीं,
ना पूरा पशु हो पाते है, ना ही पशुता को त्याग पाते है
इसलिए हे ईश्वर बस इतना कर देना,
दे देना वो समझ जो संतुलन बना सके इन दोनों के बीच।

अमन बिष्ट
सामाजिक सुरक्षा सहायक
कर्मचारी भविष्य निधि संगठन क्षेत्रीय कार्यालय, नोएडा



जरूरत

जो खुद ही संभल जाओ
तो सहारे की क्या जरूरत।
रास्ते खुद ही ढूंढ लोगे
तो इशारे की क्या जरूरत।
जो पा ही लूं मंजिल
तो भटकने की क्या जरूरत।
और गर हासिल हो सब कुछ
फिर तड़पने की क्या जरूरत।
इस खामोश जिंदगी में
तेरी आहटों की क्या जरूरत।
और गर मिले सुकून की नींद
फिर करवटों की क्या जरूरत।
जो दुआ में नाम तेरा हो
फिर आयत की क्या जरूरत।
और जो राजि हो तुम मेरे हर लफ्ज पे,
फिर शिकायत की क्या जरूरत।
अगर चर्चे हैं हमारी मोहब्बत के इस शहर में,
फिर अखबारों की क्या जरूरत,
और जहां तोड़ आए हम उन नफरत के पहाड़ों को,
वहां इन दिवारो की क्या जरूरत।
जो मिल जाये तारे जमीन पर,
तो आसमान की क्या जरूरत ।
और अगर होते हर देश एक जैसे,
फिर हिन्दुस्तान की क्या जरूरत ।

श्वेता झा

सुरक्षा सहायक

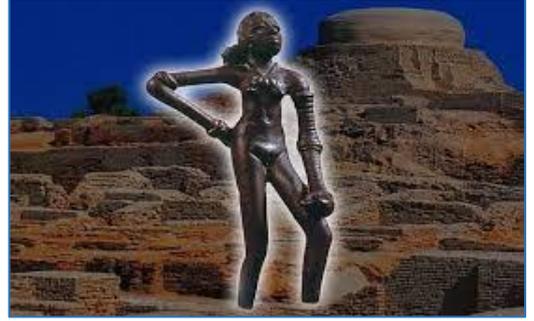
कर्मचारी भविष्य निधि संगठन क्षेत्रीय कार्यालय, नोएडा



भारत की कला एवं संस्कृति

भारतीय समाज भिन्न-भिन्न भाषाओ ,मानव जाती ,धर्म,रीति-रिवाज ,परम्पराओ वाला देश है। जहां की संस्कृति आज पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। यह एक ऐसी संस्कृति वाला देश है ,जहां की संस्कृति निरंतर चलते जा रही है ,विश्व में इतनी सारे देश के संस्कृति को पीछे छोडकर यह एक अलग आयाम के साथ आगे बढ़ रही है। भारत में शुरू से लेकर आज तक इसकी संस्कृति इसकी कला ,विरासत ,धरोहर के वजह से जानी जाती है । बाहर देश के अनुयाई भी यहाँ आकर हमारे संस्कृति एवं कला का अध्ययन कर रहे है । जन-जन तक यहा की संस्कृति को पहुंचा रहे है। भारतीय संस्कृति की विरासत इसके प्रागैतिहासिक काल से लेके अज्ज के आधुनिक काल तक में अपनी कला के वजह से बहोत ही प्रसिद्ध हुई है ।

प्रागैतिहासिक काल के प्राप्त मिर्जापुर के लखनीयां दरी के पंख वाले चित्रो की बात हो ,या मोहनजोदाडो और सिंधु घाटी से प्राप्त अवशेषो की बात हो सभी आज भी पूरे विश्व में अपनी कला की छाप छोड़ते है । और भारत को विश्व काला क्षेत्र में एक अलग दर्जा दिलाते है ।



भारतीय कला क्षेत्र सुरु से सूर्य से लेके आज के भारत में रहने वाली सभी जातियो धर्मो को अपनी कला के माध्यम से जीवित रखते है ।

मंदिर स्थापत्य कला में भारतीय शैली के 108 शैलियो की बात हो जिनका वर्णन विष्णुधर्मोत्तर पुराण में भी प्राप्त होता है ,तथा जिन्हे आज हम मुख्यतः नगर ,द्रविड़ ,बेशर ,पगोडा के नाम से भी जानते है । इनकी जीवंत उदाहरण भारत के हर कोने में आज भी देखने को प्राप्त होते है ।

खजुराहो के मंदिरो में कंदरिया महादेव की बनावट , उड़ीशा के कोणार्क मंदिर के बाह्य अलंकरण ,जगन्नाथ मंदिर के गोपुरम ,वाराणसी का नेपाली मंदिर हो या जैन धर्म के मंदिर हो हमने कला को हर किसी के उत्थान का कारण बनते देखा है ।



भारतीय कला एवं संस्कृति की सोच विचारधारा यही समाप्त नहीं होती है , भारत में बने सभी गुहा चित्र या चट्टानों को काटकर की गयी नक्काशी का नमूना कला का अधभूत प्रदर्शन भी हमे यहा देखने को मिलता है ।

अजंता की गुहा उसमे प्राप्त बुद्ध के चित्र , मूर्तिया ,स्तूप रंगो की सुसज्जा सभी आंखो को खुले रखने पर मजबूर कर देती है एवं भारतीय कला एवं संस्कृति की जीवंतता को बनाए रखती है । इतना ही नहीं एलोरा (एलपुरा) की गुहा में



भारतीय कला एवं संस्कृति को जीवित रखने के लिए भारतीय धर्मों का एकीकरण करके हिन्दू ,बौद्ध ,जैन तीनों को एक साथ प्रदर्शित किया गया है ,जो भारत के सुद्रीढ़ कला एवं संस्कृति के आयाम को सिद्ध करती है उसे प्रस्तुत किया गया है ।

यह परंपरा कला के माध्यम से आज भी भारत में जीवित है आज भी हम विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय कला को भारतीय संस्कृति के जीवित रूप को प्रस्तुत करने हेतु निरंतर प्रयोग में लाकर भारतीय कला एवं संस्कृति को प्रस्तुत कर रहे है ।

सौरभ श्रीवास्तव
कनिष्ठ संकाय, एफ डी डी आई
नोएडा



मेरा शहर

वो नदी किनारे खेलते शहर को भूलना बड़ा मुश्किल है;
यहां इन ऊंची इमारतों के बीच खिल जाना यूं आसान नहीं।

उसकी मिट्टी की वो सोंधी महेंक भूलना बड़ा मुश्किल है;
यहां साफ हवा भी मिलना यूं आसान नहीं।

वो हंसते हुए ठिठोली करते दोस्तों को भूलना बड़ा मुश्किल है;
यहाँ अजनबी शकलो से वबस्ता यूं आसन नहीं।

वो बिदाई पे रोते रिश्ते को भूलना बड़ा मुश्किल है;
यहां नए रिश्ते को आंखो में भरना यूं आसान नहीं।

वो सहर, वो गलियाँ, वो घरौंदा भूलना बड़ा मुश्किल है;
यहां ये रास्ते, ये कुंचे, इन मकान में सुकून पाना यूं आसान नहीं।

वो नदी किनारे खेलते शहर को भूलना बड़ा मुश्किल है;
यहां इन ऊंची इमारतो के बीच खिल जाना यूं आसान नहीं।

नेहा राजपूत
कनिष्ठ संकाय,
राष्ट्रीय मध्यम अवधि मौसम पूर्वानुमान केन्द्र
नोएडा



हमारे समय की कविता

किसी का रोना देखा,
तो किसी का मुस्कराना;
इंसानियत के मरने पर,
इंसान को
बदनाम महफिलों में जाते देखा।
आजादी के नारे लगाती
आजादी को,
किसी मेज के नीचे गुलाम होते देखा।
और जकड़ी हुई गुलामी ने,
सिर्फ रात देखी
सूरज चढ़ते कभी ना देखा।
शोषित को देखा,
शोषण को देखा;
फसाने से बुनते हुए,
हकीकत के दावों को देखा।
गर्मी को,
मौसम की ज़मीन से उतर;
किसी की आंखों और बाजुओं में,
चढ़ते देखा;
और उसकी तपन को महसूस करने वाले को,
आंखो के अंदर ही बिलखते देखा।
सर्दी को भी देखा,
जमे हुए;
कुदरत में नहीं,
रिश्तों में।
रोते हुए बच्चों के लिए,
चांद को रोटी बनते देख;
थालियों में चार दिन का खाना फेंकते,
बच्चों ने कुछ भी ना देखा।
सत्ता को सत्ता के भीतर,
संघर्ष करते देखा;
उसी सत्ता को,
अपने ही मद में,
चूर होते भी देखा।

ख्यालों के टकराव में,
भाव नाश होते देखा;
विचारों के बाज़ार में,
यथार्थ को बीकते देखा।
क्रूरतम और मधुर,
हर तरह की कविता को
सत्य होते देखा है;
कविताओं के शब्द कम
पड़ सकते हैं,
हमारे समय ने,
इतना समय देखा है।
लेकिन,
उससे आगे चलने की होड़ में;
अनायास ही पीछे छूट गए इंसान में;
और उसकी सत्ता ना समझ पाए
इंसान की वजह से;
हमारे समय ने कम ही देखा है,
खुद को हमारे साथ!!!

नेहा राजपूत
कनिष्ठ संकाय,
राष्ट्रीय मध्यम अवधि मौसम पूर्वानुमान केन्द्र
नोएडा



हां, मैं एक सैनिक की विधवा हूँ

मां ने कभी तवे की आंच ना लगने दी इन हाथों को,
आज अंगारों पर चलना सीख रही हूँ
हां, मैं एक सैनिक की विधवा हूँ,
और खुद को अकेले संभालना सीख रही हूँ।

डरती थी कभी अकेले रहने से भी,
आज पूरा परिवार संभालना सीख रही हूँ,
हां, मैं एक सैनिक की विधवा हूँ,
अपने साहस को हथियार बनाना सीख रही हूँ।

कभी रहती थी घर की चार दीवारी में,
आज समाज से लड़ना सीख रही हूँ
हां, मैं अपने बच्चों की खातिर
नया आसमान बनाना सीख रही हूँ।

रंग बिरंगी पोशाकों में पली बढ़ी,
आज खुद को कोरे रंग में ढालना सीख रही हूँ
हां, मैं एक सैनिक विधवा हूँ,
और तुमसा त्याग समर्पण सीख रही हूँ ॥

तुम्हारे घर आने के संदेशों से ही,
गुड़िया कितनी खिलखिला जाती थी।
मेरे पापा आएंगे, प्यारी सी गुड़िया लायेंगे, कहकर
सबको चिढ़ाती थी।
घर की चौखट पर बैठी आज वो भी राह देख रही है,
पापा की गोदी चढ़ने को, बिटिया भी तरस रही है।

सीमा पर लड़ कर जिसने देश पर जान लुटाई है,
तिरंगे की शान की खातिर सीने पर गोली खाई है।
हां, मैं भी उस सैनिक की विधवा हूँ,
मैं भी लड़ना सीख रही हूँ,
कुरीतियों में जकड़े इस समाज में सम्मान से चलना सीख
रही हूँ।

वीरांगना का दर्जा मिला मुझे,
उस नाम का मान रखना सीख रही हूँ।
हां, मैं एक सैनिक की विधवा हूँ
आहत हूँ, व्याकुल हूँ... फिर भी जीना सीख रही हूँ...
फिर भी जीना सीख रही हूँ

अंकिता जैन

तकनीकी अधिकारी

वस्त्र आयुक्त का क्षेत्रीय कार्यालय, नोएडा



डॉक्टर साहब - मुझे बेटी नहीं, बेटा चाहिए

बचपन कितना मासूमियत से भरा होता है। जब एक नन्ही सी जान इस दुनिया में आती है तो मानो ईश्वर ने सारा आशीर्वाद लुटा दिया हो अपना। उसके कोमल-कोमल से हाथ, उसका मंद-मंद मुस्काना और कभी-कभी सुकून से सो जाना। बच्चों के आने से लगता है मानो हमने एक नई दुनिया में प्रवेश कर लिया हो। कहानी की शुरूवात करने से पूर्व मैं आपको अपना परिचय देना चाहूंगी, मैं किया जैना लोगों के लिए मैं किया हूँ पर अपनी मम्मी के लिए तो प्यारी सी गुड़िया हूँ। बचपन से ही संयुक्त परिवार में पली-बढ़ी। हमारे परिवार में हम पांच बहनों पर एक भाई है। मेरी अपनी सगी दो छोटी बहने हैं। आज भी समाज में यह सोच है कि बेटी हो न हो एक बेटा होना तो जरूरी है। कुल का वंश बढ़ाने के लिए। मैंने बचपन से ही लड़कों की तरह उठना बैठना, कार्य करना शुरू किया ताकि मैं एक लड़के की कमी को पूरी कर सकूँ, परन्तु घर में मौजूद सदस्यों को ही यह पसंद था उनका कहना था लड़कों के कपड़े पहनने से तुम लड़का नहीं बन जाओगी, ससुराल में जाकर घर के काम करने है उस पर ध्यान लगाओ वही आगे काम आएगा। मेरी पढ़ने में बड़ी रूचि थी परंतु सभी लोगों ने मेरे पापा मम्मी से कहा कि अगर तुम लोग सारा पैसा इस लड़कियों की पढ़ाई में लगा दोगे तो शादी क्या कर्ज लेकर करोगे। ससुराल में जाकर इनको चुल्हा-चौका ही तो करना है। इनको घर के कामों में निपुण बनाओ नहीं तो इनके ससुराल से भी ताने सुनने को मिलेंगे। मेरी सबसे बड़ी ताई जी जिनके सिर्फ एक बेटा था वह घर में खूब इठलाती थी। कोई भी नया खिलौना हो या नया सामान पहले उनके बेटे वंश को मिलता था। हम सब बहने भी वंश से बहुत प्यार करती थी। वंश ने भारत के सर्वश्रेष्ठ कॉलेज से अपनी पी.एच.डी की उपाधि प्राप्त की और पूना जैसे बड़े शहर में नौकरी करने लगा। हम सब बहनों की भी समाय के साथ शादी हो गई और ससुराल में व्यस्त हो गई। समय बीतने लगा, जिस घर में किलकारियों की आवाज थी, वह अब कहीं गुम सी हो गई। घर में सन्नाटा पसरने लगा। वंश को भी जॉब से प्रमोशन मिल गया और वो विदेश चला गया। मां मुझसे फोन पर अक्सर कहती थी एक समय था जब हम लोग तुम सब पर चिल्लाते थे, शोर मत करो, कचरा मत फैलाओ, ऐसा करो, वैसा करो, पर आज ये सूना घर काटने को दौड़ता है। पर ठीक है जो है, जैसा है अब जीना ही है। एक दिन अचानक मां का फोन आया और कहा ताई जी की तबियत बहुत खराब है, उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया है तुम सब बहने जल्दी अस्पताल आ जाओ। मुझे याद नहीं शायद रात का एक बज रहा होगा, हम सब बहने बिना अपनी सुध-बुध संभाले घर अस्पताल के लिए रवाना हो गई। सुबह तक हम सब अस्पताल पहुंच गई। अस्पताल जाकर मालूम हुआ कि ताई जी की किडनी खराब हो गई है और जल्द से जल्द किडनी बदलनी पड़ेगी। हम तीनों बहनों ने एक ही स्वर में कहा मैं दूंगी अपना किडनी। डॉक्टर साहब आप हमारी किडनी ले लो पर ताई जी को ठीक कर दो। ऑपरेशन सफल रहा और ताई जी की तबियत सुधरने लगी। ताई जी की आंखे नम थी। मैंने ताई जी से कहा आप चिंता क्यों कर रहे हो हम सब हैं न आपके साथ। अब आप जल्दी ही ठीक हो जाओगे। ताई जी गले तग आंसुओं से भरी थी, उन्होंने नम शब्दों में कहा मैं ऐसा क्या करूँ कि मेरे पाप कम हो जाए। मैंने तुम सब बहनों को कभी परिवार का हिस्सा नहीं समझा, हमेशा पराया धन कहकर कोसा। आज इस मुश्किल समय में तुम सब लोग मेरे पास हो और मेरा इकलौता बेटा वंश चाहकर भी मुझ तक नहीं पहुंच पाया। हो सके तो तुम सब मुझे माफ कर दो। हम सब ने ताई जी को एक साथ गले लगाया। आज वो अपनापन महसूस हुआ। दिलों के बीच जितनी दूरीयां थी वो खत्म हो गई। आज ऐसा लगा जो कान्हा जी से सालों से प्रार्थना की वो सफल हो गई।

बेटा-बेटी में फर्क करो।

सबको जनने वाला तू।

कोई साथ ना जाएगा।

जब आवाज लगाएगा तू।

प्रेरणा – आज इतना शिक्षित होने के बावजूद हम बेटे और बेटियों में फर्क करते हैं। बेटा या बेटी होना ईश्वर की देन है। बेटे और बेटियों में फर्क करने के बजाए हमें ईश्वर के दिए आशीर्वाद के लिए शुक्रगुजार होना चाहिए।

अंकिता जैन

तकनीकी अधिकारी

वस्त्र आयुक्त का क्षेत्रीय कार्यालय, नोएडा



एक एहसास

ना कोई बंधन है , ना कोई नाता है,
बन गुलशन मेरी ज़िंदगी में आना, एक मीठा सा एहसास है तेरे मेरे बीच में।
काँटों की राहों में फूलों का गुलशन है,
आसमान में फैली हुई बादलों की छावों सा एहसास है तेरे मेरे बीच में।
ये नाता पुराना है जो ताह उम्र निभाना है,
एक अजीब सी कशमकश है ये , जो बयां न हो वो एहसास है तेरे मेरे बीच में।
मिश्री सी मिठास है, तेरी बातों में, दिल से न जाए वो एहसास है,
तेरे सुनहरे बालों को सुलझाना, दिल को सुकून दे , वो एहसास है तेरे मेरे बीच में।
इस दौड़ -भाग भरी ज़िंदगी में एक ठहराव है,
यूही मेरा हाथ थामे रखना ओ सनम , प्यार भरी रिश्तो की डोर का एहसास है तेरे मेरे बीच में।

मोनिका शर्मा,
अवर श्रेणी लिपिक
वस्त्र आयुक्त का क्षेत्रीय कार्यालय, नोएडा



जिंदगी सुन ना

फिर एक बार शहर से गांव की ओर चलते हैं ना,
बिन चप्पल नंगे पैर फिर उन सड़कों पर दौड़ते हैं ना,
वो बेरी से पानी को खींचकर मटकियों को भरते हैं ना,
जिंदगी चल ना, फिर एक बार शहर से गांव की ओर चलते हैं ना..
वो लकड़ियों को काट फिर से चूल्हा जलाते हैं ना,
मिट्टी से फिर आज आंगन लीपते हैं ना,
घर के बाहर बैठ घंटों बातें करते हैं ना,
जिंदगी चल ना, फिर एक बार शहर से गांव की ओर चलते हैं ना..
रात में तारों की छांव में छत पर सोते हैं ना,
कोयल की आवाज वाली भोर को फिर से जीते हैं ना,
दोस्तों के घर जाकर टी.वी. देखते हैं ना,
जिंदगी चल ना, फिर एक बार शहर से गांव की ओर चलते हैं ना..
बिना एडमिशन ही स्कूल में पढ़ने चलते हैं ना,
चल फिर से गुड्डे गुड़िया की शादी करते हैं ना,
मिट्टी के बर्तन में खाना बनाकर घर-घर खेलते हैं ना,
जिंदगी चल ना, फिर एक बार शहर से गांव की ओर चलते हैं ना..
वो एक रुपये में चार टॉफी लेकर आते हैं ना,
चलो एक बार फिर से कागज़ की नाव बनाते हैं ना,
और हर शाम गिल्ली-डंडा खेलते हैं ना,
जिंदगी चल ना, फिर एक बार शहर से गांव की ओर चलते हैं ना..
मां की साड़ी पहन शीशे में निहारते हैं ना,
घर के आंगन में मिट्टी का घरौंदा बनाते हैं ना,
और थक कर मां से लिपटकर सोते हैं ना,
जिंदगी चल ना, फिर एक बार शहर से गांव की ओर चलते हैं ना..

प्रिया गुप्ता
आशुतिपिक

वस्त्र आयुक्त का क्षेत्रीय कार्यालय, नोएडा



कंठस्थ

राजभाषा विभाग द्वारा विकसित स्मृति आधारित अनुवाद टूल "कंठस्थ * 2.0

केंद्रीय सरकार के सभी मंत्रालयों विभागों राष्ट्रीयकृत बैंको, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के राजभाषा अधिकारियों एवं अनुवाद अधिकारियों को एक दूसरे से जोड़ने तथा एक दूसरे के कार्यों से लाभान्वित करने के उद्देश्य से इस टूल को विकसित कराया गया है ताकि अनूदित कार्य की पुनरावृत्ति कम हो तथा अनुवाद कार्य कम समय में पूरा किया जा सके। राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों के साथ साथ राष्ट्रीयकृत बैंको सार्वजनिक क्षेत्रों के उपक्रमों के राजभाषा अधिकारियों एवम अनुवाद अधिकारियों को इस टूल का प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

कंठस्थ 2.0 * के माध्यम से अनुवाद कार्य :-

"कंठस्थ 2.0" ट्रांसलेशन स्मृति के आधार पर कार्य करता है। जब हम अनुवाद कार्य "कंठस्थ 2.0" के द्वारा करते हैं जो अन्तरिम अनूदित दस्तावेज तैयार होता है वह "कंठस्थ 2.0" के सर्वर पर ई.एम. (EM) के रूप में भी संरक्षित हो जाता है, जिससे इस अनुवाद कार्य से सभी प्रयोगकर्ता लाभान्वित होते हैं।

यह किए गए कार्य को टी.एम. (टी.एम.) के रूप में संरक्षित करता है। टी.एम. एक ऐसा डेटा बैंक है, जिसमें स्रोत भाषा तथा उसके अनूदित रूप को एक साथ रखा जाता है। जब भविष्य में अनुवाद हेतु नई फाइल अपलोड की जाती है तो सिस्टम द्वारा टी.एम. डाटा बेस से वाक्यों के अनुवाद को खोजकर लाया जाता है।

टी.एम. दो प्रकार की होती है :

प्रथम लोकल टी एम (टी.एम.)-

जब यूजर किसी भी वाक्य का अनुवाद कर Commit करता है तो वह लोकल टी.एम. कहलाती है तथा यह यूजर के एकाउंट पर संरक्षित होती है।

दूसरी ग्लोबल टी एम (टी.एम.)-

विभिन्न मंत्रालयों विभागों राष्ट्रीयकृत बैंको तथा सार्वजनिक क्षेत्रों के उपक्रमों के चयनित राजभाषा अधिकारियों को जिन्हें वेट (पुनरीक्षण) करने के लिए अधिकृत किया गया है, के द्वारा सेंट्रल सर्वर पर जो टी.एम. अपलोड की जाती है उसे ग्लोबल टी.एम. कहते हैं तथा यह सभी यूजर के लिए अप्रत्यक्ष के रूप में उपलब्ध होती है।

पूर्वतः मिलान - जिन वाक्यों को टी.एम. डाटा बेस से 100% मिलान होता है उसे पूर्णत मिलान या (परफेक्ट मैच) कहते हैं।

आंशिक मिलान - जिन वाक्यों का मिलान 1% से 99% के मध्य होता है तो उन्हें आंशिक मिलान कहते हैं और यदि किसी वाक्य का अनुवाद डेटाबेस में नहीं मिलता है तो No Translation Available का विकल्प होता है।

कंठस्थ 2.0 के दो संस्करण विकसित किए गए हैं।

पहला - वेब संस्करण जिसका यूआरएल है: www.kantthasth-rajbhasha.gov.in

दूसरा स्टैंड अलोन संस्करण, जिसे राजभाषा विभाग की वेबसाइट तथा कंठस्थ के यूआरएल से डाउनलोड किया जा सकता है।

कंठस्थ के स्टैंडअलोन संस्करण को कम्प्यूटर में डाउनलोड करने से पूर्व कम्प्यूटर में कम से कम 4 (GB) की रैम (RAM) माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस 2007 तथा जावा 1.8 SAVA JDK आदि उपलब्ध होना चाहिए।

कंठस्थ 2.0 की कार्यप्रणाली

वेब संस्करण का प्रयोग करने के लिए पंजीकरण करना होता है तथा स्टैंडअलोन का प्रयोग करने के लिए डाउनलोड किया जाता है। डाउनलोड करने के बाद उसे सिस्टम पर रन करना होता है। वेब संस्करण में यूजर आईडी तथा पासवर्ड फिल करते हैं और लॉगिन कर देते हैं तथा स्टैंड अलोन संस्करण में जो आईकॉन सिस्टम पर बनता है उस पर क्लिक किया जाता है। दोनो ही संस्करण की प्रणाली एक समान है दोनो का होम पेज एक जैसा खुलता है जिस पर जाकर हमें एक नया प्रोजेक्ट बनाना होता है। इसके बाद नया फोल्डर बनाते हैं तथा फोल्डर बनाते समय ही उसमें अनुवाद हेतु कम से कम एक फाइल अपलोड कर देते हैं अब फाइल को एडिटर पेज पर खोलते हैं तथा वाक्यों का अनुवाद करते हैं। इसके बाद अनुदित फाइल को डाउनलोड कर लिया जाता है यूजर द्वारा जो कार्य Commit किया गया है वह उसकी लोकल टी.एम. में संरक्षित हो जाती है अब इन सभी टी.एम. को आप अपने मंत्रालय विभाग, बैंक या उपक्रम के अधिकृत Vetter को भेजते हैं तथा Vetter द्वारा इनकी जांच कर ग्लोबल टी.एम. हेतु सेंट्रल सर्वर पर अपलोड किया जाता है।

कंठस्थ 2.0 की प्रमुख विशेषताएं

कंठस्थ 2.0 का सेंट्रल सर्वर एन.आई.सी. द्वारा अनुरक्षित किया जाता है तथा सभी डेटा एन.आई.सी. द्वारा सुरक्षित रखा जाता है। इस पर 20 एम.बी. तक फाइल अपलोड कर सकते हैं। फाइल को विभाजित तथा शेयर करने की सुविधा उपलब्ध है। पूर्ण रूप से मानवीय अनुवाद की उपेक्षा सिस्टम की सहायता से अनुवाद का कार्य कम समय में पूरा किया जा सकता है। स्वयं अपनी लोकल टी.एम. बना सकते हैं कार्य को सेव कर सकते हैं। अनुवाद के समय सर्वप्रथम लोकल टी.एम. से मिलान की सुविधा उपलब्ध है जिससे हमारी लेखन शैली में एकरूपता बनी रहती है। वर्ड तथा एक्सेल की फाइलों को फॉर्मेट रिटेंस की सुविधा उपलब्ध है। सेंट्रल सर्वर पर अधिकृत अधिकारियों द्वारा ही डेटा भेजने की सुविधा उपलब्ध है। किसी विशेष वाक्यांश की सुविधा वह फाइल को खोजने विश्लेषण करने की सुविधा जिसकी सहायता से हम फाइल के अनुवाद में लगने वाले समय का अनुमान भी लगा सकते हैं और द्विभाषिक फाइल डाउनलोड की जा सकती है। किसी समय विशेष कि रिपोर्ट प्राप्त की जा सकती है। प्रोजेक्ट फोल्डर एवं फाइल बनाने तथा उन्हें कम्प्यूटर से लेने की सुविधा उपलब्ध है। विभिन्न प्रकार की फाइलों के फॉर्मेटों को अनुवाद हेतु अपलोड किया जा सकता है। केवल यूनिकोड समर्थित फोन्ट की फाइले अपलोड करने की सुविधा निःशुल्क उपलब्ध है।

त्वरित अनुवाद (Instant Translation) के लिए

Instant Translation अनुवाद करे या पेस्ट करे और ओपन इन एडिटर बटन पर क्लिक करें, हमारे द्वारा जो भी कार्य Commit होगा उसे Show टी.एम. के द्वारा देखा जा सकता है।

टी.एम. फोल्डर के आधार पर सेव होती है। किसी भी फाइल का विश्लेषण करने के लिए Analysis मे पर क्लिक करे, और फिर Add फाइल पर क्लिक करें, तथा फाइल की स्थिति को देखे किसी समय विशेष में किए गए कार्य का पता करने के लिए रिपोर्ट पर तिथियो का चयन करे और डेटा प्राप्त करे। कठिन शब्दों का अर्थ ढूँढने के लिए शब्दकोश की मदद ले सकते हैं। इस शब्दकोश मे तकनीकी एवं वैज्ञानिक शब्दावली आयोग की शब्दावली के शब्दों को भी ऐड (Add) किया गया है।

मदद (Help)

(Help) हेल्प बटन की सहायता से हमे कंठस्थ 2.0 के यूजर मेनुअल की हाइपर लिंक की पीडीएफ फाइल द्विभाषी रूप में उपलब्ध होगी जिसकी सहायता से हम प्रशिक्षण संबंधी पूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते है।

अब हम प्रोजेक्ट टूल बार पर आते है। जिस पर 2 बटन, एक नया प्रोजेक्ट बनाने के लिए तथा दूसरा सिस्टम पर उपलब्ध प्रोजेक्ट प्राप्त करने के लिए है। नया प्रोजेक्ट, बटन की सहायता से नया प्रोजेक्ट बनाये इसके बाद फोल्डर पेज खुलेगा, जिसमें 3 बटन है पहले बटन की सहायता से नया फोल्डर बनाये तथा उसमें फाइल को अपलोड करे। अब हम इनबॉक्स / फाइल पेज पर है। इसपेज पर कुल बारह बटन दिए गए है।

जिनकी सहायता से हम अतिरिक्त फाइल जोडना, टी.एम. जोडना, स्रोत फाइल डाउनलोड करना, अनूदित फाइल डाउनलोड करना, फाइल को डिलीट करना, आदि कर सकते है। किसी भी फाइल पर डबल क्लिक करने पर एडिटर पेज खुल जायेगा जिस पर कुल 21 बटन दिये गये है जिनकी सहायता से हम अनुवाद कार्य कर सकते है।

कंठस्थ 2.0 में मेआईहेल्पयू का विकल्प उपलब्ध है और वॉइस (Voice) टाइपिंग भी दे दी गयी है तथा इसे मोबाइल द्वारा भी इस्तेमाल किया जा सकता है जो लॉगिन हम अपने कम्प्यूटर पर करेंगे उसी लॉगिन से हम मोबाइल में भी इस्तेमाल कर सकते है।

श्री दीपक चौहान
हिंदी अनुभाग

भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण, नोएडा



सफर और हमसफर

आगे सफर था पीछे हमसफर
रुकते तो सफर हुट जाता
और चलते तो हम सफर छुट जाता
मंजिल की भी हसरत थी
और उनसे भी महोबत थी
ए दिल तु ही बता उस वक्त मैं कहाँ जाता
आगे सफर था पीछे हमसफर था
मुद्धत का सफर भी था
और बरसो का हमसफर भी था,
रुकते तो पिछड़ जाते
और चलते तो बिछुड़ जाते,
यू समझलो प्यास लगी थी, गजब की
मगर पानी में जहर था
पीते तो मर जाते और न पीते तो भी मर जाते,
आगे सफर था पीछे हमसफर था
सफर हो भी जाता पूरा
मगर हमसफर के बिना है जीवन अधूरा
उन्हें साथ लेकर, यही सोचकर
लेली एक नई और अंजान डगर
चल पड़े हैं तय करने एक नया सफर हाँ मगर में साथ है
अब हमसफर।

श्री नरेन्द्र सिंह
हिंदी अनुभाग
भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण,
नोएडा



सुकून

“वफाओं के बाज़ार में,
तुम्हे कई खरीदार मिलेंगे”
“हम ना बिके तो क्या,
हम जैसे हजार मिलेंगे”
“कुछ खरीदने ही जाओ तो,
सुकून-ए-जिन्दगी खरीदना”
“बाकि दर्द, बेबसी, तन्हाई
हर किसी के पास मिलेंगे”

श्रीमती सोनिका मलिक
अवर श्रेणी लिपिक
विकास आयुक्त कार्यालय, नोएडा विशेष
आर्थिक क्षेत्र



नई दिल्ली में चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा हिंदी सम्मेलन की यात्रा

14 सितम्बर, 2024 की गुनगुनाती सुबह थी। मैं हिंदी दिवस एवम् चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन जो कि नई दिल्ली भारत मंडपम में आयोजित हुआ उसमें भाग लेने हेतु जा रहा था।

मैं अपने वाहन से हिंदी दिवस एवम् चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में पहुंचा मैंने देखा की 14 सितम्बर, 2024 के दिन दिल्ली की सड़को पर मानो ऐसा लग रहा था कि पूरा शहर हिंदीमय वातावरण में रम गया हो। चारों तरफ उत्साह और असीम आनंद का अनुभव हो रहा था। मंडपम के अन्दर ऊँचे चबूतरे पर लगी नटराज की मूर्ति पर सम्मेलन में आये लोगों की अपनी अपनी फोटो उतारने के लिए भीड़ देखी गयी। और कर्मचारी, जो भिन्न-भिन्न विभागों से थे, इनमें से जानने वाले कर्मचारी थे, जिनसे मुलाकात हुई। मैं राजभाषा सम्मेलन में सुबह 9:35 पर पहुंच गया। वहां लगभग 95% अधिकारियों और कर्मचारियों की भीड़ थी और दिल्ली मंडपम मे लगे वहां के सुरक्षा कर्मी सभी को एक-एक करके अन्दर प्रस्थान के लिए भेज रहे थे।

जैसे ही मैंने भारत मंडपम के अंदर प्रस्थान किया वहाँ का नजारा देखने लायक था मैं अपनी सीट पर जाकर बैठ गया। राजभाषा हिंदी सम्मेलन की समय सीमा के अनुसार केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी ने सभा में पहुंचकर संबोधित किया, उन्होंने कहा कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की भाषाओं की विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने का नाम हिंदी है। उनके द्वारा कहा गया की भारत वर्षों से ही विभिन्न भाषाओं का देश रहा है।

कार्यक्रम के प्रथम दिन पुरस्कारों का विवरण किया गया। जिससे विभिन्न मंत्रालय विभाग/सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम/भारत सरकार के बोर्ड आदि के कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम स्थल पर विभिन्न कार्यालयों/उपक्रमों/बैंको/अर्द्धसैनिक बलों के स्टाल लगे थे। जो बहुत सुंदर और दर्शनीय थे। हमारे कार्यालय द्वारा प्रकाशित “प्रेरणा” का छोटे संस्करण पुस्तक का वितरण भी वहां हमारे द्वारा किया गया।

अर्द्धसैनिक बलों के स्टाल पर उनके द्वारा किये गए विभिन्न कार्यों को दर्शाया गया था जो कि “प्रेरणा” से भरा हुआ था।

सम्मेलन में राज्यसभा के उप सभापति श्री हरीवंश, राजभाषा विभाग की सचिव श्रीमती अंशुलि आर्या और कई जानी मानी हस्तियों ने अलग अलग विषयों पर संबोधित किया। सत्र के पहले दिन निम्न विषयों पर कार्यक्रम आयोजित किए गए इनमें निम्नलिखित ने भाग लिया:-

विषय: राजभाषा विकसित भारत का भाषायी परिदृश्य (आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस सहित)

1. श्री हरीवंश-उप सभापति, राजभाषा
2. डॉ. सुधांशु त्रिवेदी-संसद सदस्य, राज्य सभा
3. श्री अजय कुमार मिश्रा-पूर्व गृह राज्य मंत्री

विषय: भारत की सांस्कृतिक विरासत और हिंदी

1. डॉकुमार . विश्वास हिंदी कवि एवं व्याख्याता-

इनमें निम्नलिखित ने भाग लिया।

सम्मेलन का दूसरा दिन:-

सत्र के दूसरे दिन मैं और श्री राजेश, उच्च श्रेणी लिपिक जो मुंबई सीपज से आये थे हम सुबह-सुबह दूसरे दिन सम्मेलन में पहुंचे। वहां का माहौल बहुत ही खुशनुमा था। लोग भिन्न भिन्न तरीके से तस्वीरें ले रहे थे। वहीं कुछ लोग नाश्ते का आनंद ले रहे थे। हर तरफ लोग खुश थे, मानों ऐसा लग रहा था जैसे कि कोई उत्सव हो।

सत्र के दूसरे दिन निम्न विषयों पर कार्यक्रम आयोजित हुआ।

विषय: भाषा शिक्षण में शब्दकोश की भूमिका एवं देवनागरी लिपि का वैशिष्ट्य

1. प्रो. विमलेश कांति वर्मा-भाषाविद
2. प्रो. एस.तंकमणि अम्मा-भाषाविद केरल विश्वविद्यालय
3. प्रो. गिरीश नाथ झा-अध्यक्ष, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग
4. प्रो. सुनील बाबू राव कुलकर्णी-निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
5. डॉ. इसपाक अली-लेखक एवं शिक्षाविद, बंगलुरु

विषय: तकनीक के दौर में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में “नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति” का योगदान

1. श्री नित्यानंद राय-माननीय केंद्रीय गृह राज्य मंत्री
2. डॉ. अम्लान त्रिपाठी-प्रधान आयकर आयुक्त-9, कोलकाता (दक्षिण)
3. श्री अतुल कुमार गोयल-प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, पंजाब नेशनल बैंक
4. श्री अजय कुमार श्रीवास्तव-प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, आई.ओ.बी.
5. अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक-हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड

विषय: भारतीय न्याय संहिता 2023, भारतीय सुरक्षा संहिता 2023 एवं भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023: एक परिचर्चा

1. श्री अर्जुन राम मेघवाल-माननीय केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री
2. प्रो. संगीत रागी-लेखक एवं कवि
3. श्री तुषार मेहता-भारत के महासॉलिसिटर

विषय: हिंदी भाषा के विकास का सशक्त माध्यम: भारतीय सिनेमा

1. श्री अनुपम खेर-अभिनेता
2. श्री चन्द्र प्रकाश द्विवेदी-फिल्म निर्माता एवं निर्देशक

शाम 5 बजे सम्मेलन के समापन सत्र का आयोजन हुआ और सभी लोगो ने समापन सत्र का आनंद लिया। हिंदी के विकास हेतु ऐसे कार्यक्रम होते रहने चाहिए। समापन के बाद हम दोनों लोग भी अपने अपने घर के लिए प्रस्थान कर गये।

श्री कमल
वरिष्ठ कार्यकारीविकास आयुक्त कार्यालय,
नोएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र





नराकास(कार्यालय) नोएडा के तत्वाधान में नोएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र के सौजन्य से दिनांक 26.11.2024 को स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), नोएडा

(सचिवालय : भारतीय अन्तर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण, नोएडा)

ए-13, सेक्टर - 1, नोएडा -201301